Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री ॥

शत्रुंजय तीर्थमाला, रास, उद्धारा दिक संग्रहग्रंथ.

आ पुस्तक

समस्त जैन भाइओने कार्तिक तथा चैत्री पूर्णिमादिक दिवसोमां तथा श्री शत्रुंजय यात्रा जतां वखत अवश्य पासें राखवा योग्य जाणीने.

यथा मति संशोधन पूर्वक

श्री मोहमयीमां

"निर्णयसागर" प्रेसमध्ये छपावी प्रसिद्ध करचुं छे.

संवत् १९४१ ना पौष शुद्ध ११

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ एतत्पुस्तकगतग्रंथानुक्रमणिका ॥

अंक.	ग्रंथनां नाम.	पृष्ठ.
१	श्रीसिद्धाचलजीनो उद्धार नयसुंदरजी कृत.	१
२	श्री सिद्धगिरिस्तुतिना दोहा. १०ए ..	१७
३	आदिनाथ विनंतीरूप शत्रुंजयनुंमोहोटुंस्त०	२६
४	श्री शत्रुंजय तीर्थमाला अमृतविजयजी कृत	३०
५	श्री वीरविजयजीविरचित शत्रुंजयनां एकवो श खमासमण संबंधी उगणचाजीश दोहा.	५२
६	विमल केवल ज्ञान कमला चैत्यवंदन.	५६
७	सिद्धा चल शिखरें चढी, चैत्यवंदन.	५७
८	वीरजी आया रे विमलाचलके मेदान, स्तवन.	५८
ए	शत्रुंजय मंमण ऋषजजिणंद दयाल थोय.	५ए
१०	श्री शत्रुंजय गिरि तीरथ सार, थोय. ..	६०
११	श्री शत्रुंजयनां एकवीश नाम हेतु सहित.	६२
१२	श्री शत्रुंजयनो रास, समय सुंदरजी कृत.	६५
१३	शत्रुंजो जोवानुं हो जोर बे जीराज, स्तवन.	७७
१४	शाश्वतजिन चैत्योना स्थानको.	७८
१५	चोवीश जिनना पांच कल्याणिकना दिवस.	८५
१६	दादा मोरा सासरीयें वलाव्य.	ए०
१७	नानिराया वसे वारु उदूयो जिणंद.	ए१

For Private and Personal Use Only

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री नयसुंदरजी कृत सिद्धाचलजीनो उद्धार प्रारंभः ॥

॥ विमलगिरिवर विमलगिरिवर,मंमणो जिनराय॥ श्री रिसहेसर पायनमि, धरिय ध्यान सारदा देविय॥ श्री सिद्धाचल गायसुंए, हीये जाव निर्मल धरेविय ॥ श्री शत्रुंजगिरि तीरथ वडुं, सिद्ध अनंति कोडी ॥ जिहां मुनिवर मुक्तें गया, ते वंदु बे कर जोडी ॥ १॥ ॥ ढाल पहेली ॥ आदनराय पुहतलाए ॥ ए देशी ॥

॥ बे कर जोडीने जिन पायलागुं, सरसती पासे वचन रस मागुं ॥ श्री शत्रुंजय गिरि तीरथ सार, थूणवा ऊलट थयो रे अपार ॥ २ ॥ तीरथ नही कोइ शत्रुंजय तोलें, अनंत तीर्थंकर इणी परे बोले ॥ गुरु मुख शास्त्रनो लहिय विचार, वरणवुं शत्रुंजा तीरथ उद्धार ॥ ३ ॥ सुरवर मांहे वडो जेम इंद्र, ग्रह गण मांहे वडो जेम चंद्र ॥ मंत्र मांहे जेम श्रीनव कार, जलदायक जेम जग जलधार ॥ ४ ॥ धर्म

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मांहे दया धर्म वखाणु, व्रत मांहे जेम ब्रह्मव्रत जाणु ॥ पर्वत मांहे वडो मेरु होइ, तिम शत्रुंजय सम तीरथ न कोइ ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ बीजी ॥ त्रण्य पल्योपम ए ॥ ए देशी ॥

॥ आगेंए आदिजिनेसर, नानी नरिंद मलार ॥ शत्रुंजय शिखर समोसखा, पूरव नवाणु ए वार॥ ६॥ केवल ज्ञान दिवाकर, स्वामी श्री रुषन जिणंद ॥ साथें चोरासी गणधर, सहस्स चोरासी मुणिंद ॥ ७ ॥ बहु परिवारें परवखा, श्री शत्रुंजय एकवार ॥ रुषन जिणंद समोसखा, महिमा न लाचुं ए पार ॥ ८ ॥ सुर नर कोडी मल्या तिहां, धर्म देशना जिन नाषे ॥ पुंमरिक गणधर आगले,शत्रुंजय महिमा प्रकाशे ॥९॥ सांनलो पुंमरिक गणधर, काल अनादि अनंत ॥ ए तीरथ छे शाश्वतुं, आगें असंख्य अरिहंत ॥ १० ॥ गणधर मुनिवर केवल, पाम्या अनंती ए कोडि, मुक्तें गया इणे तीरथ वली, जासे कर्म विछोडि ॥ ११ ॥ क्रूर जिके जग जीवडा, तिर्यंच पंखी कहीजें ॥ ए तीरथ सेव्या थकी, ते सीजे नव त्रीजे ॥ १२ ॥ दीगे डुरगती वारे ए, सारे वंछित काज ॥ सेव्यो ए शत्रुंजय गिरिवर, आपे अविचल राज ॥ १३ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ढाल त्रीजी ॥ राग धनासिरि ॥ सहीय समाणी आवो वेगें ॥ ए देशी ॥

॥ उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी आरो, बिहुं मलीने बारजी ॥ वीश कोडाकोडी सागर तेहनुं, मान कह्युं निरधारजी ॥ १४ ॥ पहेलो आरो सूसम सुसमा, सागर कोडाकोडी चारजी ॥ त्यारें ए श्री शत्रुंजय गिरिवर, एंसी जोयण अवधारजी ॥ १५ ॥ त्रण्य कोडाकोडी सागर आरो, बीजो सूसम नामजी ॥ तदा कालें ए श्री सिद्धाचल, सीतेर जोयण अभिराम जी ॥ १६ ॥ त्रीजो सूसम दूसम आरो, सागर कोडाकोडी दोयजी ॥ शाठ जोयणनुं मान शत्रुंजय, तदा काल तूं जोयजी ॥ १७ ॥ चोथो दूसम सूसम जाणो, पांचमो दूसम आरोजी ॥ छठो दूसम दूसम कहिजें, ए त्रण्य अड्य विचारोजी ॥ १८ ॥ एक कोडाकोडीसागर केरुं, एहनुं कहियें मानजी ॥ चोथें आरे श्री शत्रुंजय गिरि, पचाश जोयण परधानजी ॥ १९ ॥ पांचमें छठे एकवीश एकवीश, सहस्स वरस वखाणोजी ॥ बार जोयणने सात हाथनो, तदा विमलगिरि जाणोजी ॥ २० ॥ तेहनणी सदा काल ए तीरथ, शाश्वतुं जिनवर बोलेजी ॥ रूषभ देव कहे पुं

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मरिक निसुणो, नहीं कोइ शत्रुंजय तोलेंजी ॥ २१ ॥ ज्ञान अने निरवाण महाजस, लेहेसो तुमे इण गामें जी ॥ एह गिरि तीरथ महिमा इणे जगें, प्रगट हो से तुम नामेजी ॥ २२ ॥

॥ ढाल ॥ चोथी ॥ जिनवरशुं मेरो मन लीनोए ॥ ए देशी ॥

॥ सांनली जिनवर मुखथी साचुं, पुंमरिक गण धार रे ॥ पंचकोडी मुनिवरशुं एणेगिरि, अणसण की ध उदार रे ॥ २३ ॥ नमो रे नमो श्री शत्रुंजय गिरि वर, सकल तीरथ मांहे सार रे ॥ दीगो दुरगति दूर निवा रे, कतारे नवपार रे ॥ २४ ॥ नमो० ॥ केवल लही चैत्री पुनम दिन, पाम्या मुक्ति शुगम रे ॥ तदा कालथी पुहवी प्रगटीयुं, पुंमरिक गिरि नाम रे ॥ २५ ॥ ॥ नमो० ॥ नयरी अयोध्याथी विहरता पोहोता, ता तजी कृषन जिणंद रे ॥ शाठ सहस्स लगें षट्खंम साधी, आव्या नरत नरिंद रे ॥ २६ ॥ नमो० ॥ घरें जई मायने पाय लागा, जननी दीए आशीश रे ॥ विमला चल संघाधिप केरी, पोहोचजो पुत्र जगीश रे २७ ॥ ॥ नमो० ॥ नरत विमासे साठ सहस्स सम, साध्या देश अनेक रे ॥ हवे हूं तात प्रत्यें जइ पूछुं, संघप

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ति तिलक विवेक रे ॥ २८ ॥ नमो० ॥ समोसरणे पोहोता नरतेसर, वंदि प्रभुना पायरे ॥ इंद्रादिक सुर नर बहु मलिया, देशना द्ये जिनराय रें ॥ २९ ॥ ॥ नमो० ॥ शत्रुंजय संघाधिप यात्रा फल, नाखें श्री नगवंत रे ॥ तव नरतेसर करे रे सजाइ, जाणी लान अनंत रे ॥ ३० ॥ नमो० ॥

॥ ढाल पांचमी कनक कमल पगला ठवेए ॥
ए देशी ॥ राग धन्याश्री मारूणी ॥

॥ नयरी अयोध्याथी संचस्या ए, लेइ लेइ रुद्धि अशेष ॥ नरत नृप नावशुंए ॥ शत्रुंजय यात्रा रंग नरें ए,आवे आवे ऊलट अंग ॥न०॥३१॥ आवे आवे रुषननो पुत्र, विमलगिरि यात्रायें ए॥ लावे लावे चक्रवर्त्तिनो रुद्ध ॥ न० ॥ ए आंकणी॥ मंमलिक मुकुटवर्द्धन घणाए, बत्रीश सहस नरेस ॥ न० ॥ ३२ ॥ ढम ढम वाजे ढंढशुंए, लाख चोरासी निशान ॥ न० ॥ लाख चोरासी गज तुरीए, तेहना रत्ने जडित पलाण ॥ न० ॥ ३३ ॥ लाख चोराशी रथ नलाए, वृषन धोरी सुकुमाल ॥ न० ॥ चरणे जांजर सोना तणाए, कोटें सोवन घूघर माल ॥ न० ॥ ३४ ॥ (मोहन रूप दीसे नलाए,सवाकोडी पुत्र जमाल ॥न०॥)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बत्रीस सहस नाटिक सहीए, त्रण लाख मंत्री दक्ष ॥ न० ॥ देवी धरा पंच लख कह्याए, शोल सहस सेवा करे यक्ष ॥ न० ॥ ३५ ॥ दस कोडी अलंब ध्वजा धराए, पायक बन्नुं कोडी ॥ न० ॥ चोशठ सहस अंते उरीए, रूपें सरखी जोडी ॥ न० ॥ ३६ ॥ एक लाख सहस अठावीशए, वारांगना रूपनी आलि ॥ न० ॥ शेष तुरंगम सवि मलीए, कोडी अढार निहालि ॥ न० ॥ ३७ ॥ त्रण कोडी सायें व्यापारीयाए, बत्रीश कोडी सूआर ॥ न० ॥ शेठ सारथवाह सामटाए, रायराणा नो नही पार ॥ न० ॥ ३८ ॥ नवनिधि चौद रयणशुंए, लीधो लीधो सवि परिवार ॥ न० ॥ संघपति तिलक शोहा मणोए, नालें धराव्यो सार ॥ न० ॥ ३९ ॥ पग पग कर्म निकंदताए, आव्या आव्या आशन जाम ॥ न० ॥ गिरि देखी लोचन उघाए, धन धन शत्रुंजय नाम ॥ ॥ न० ॥ ४० ॥ सोवन फूल मुगता फलेंए, वधाव्यो गिरि राज ॥ न० ॥ दीए प्रदक्षणा पाखतीए, सीधां सघलां काज ॥ न० ॥ ४१ ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥ जयमालानी ॥ प्रभु पासनुं मुखडुं जोतां ॥ ए देशी ॥

॥ काज सीधा सकल हवे सार, गिरी दीठे हरख

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपार ॥ ए गिरिवर दरिशण जेह, यात्रा पण कहियें तेह ॥ ४२ ॥ सूरज कुंम नदी शेत्रुंजी, तीरथ जलें नाह्या रंजी ॥ रायण तलें रुषन जिणंद, पहेला प गला पूजे नरिंद ॥ ४३ ॥ वली इंद्र वचन मन आ णी, श्रीरुषननुं तीरथ जाणी ॥ तव चक्री नरत न रेश, वार्द्धिकने दीधो आदेश ॥ ४४ ॥ तेणे शत्रुंजा ऊपर चंग, सोवन प्रासाद उतंग ॥ नीपायो अति मनो हार, एक कोश उंचो चउबार ॥ ४५ ॥ गाउदोढ वि स्तारें कहियें, सहस धनुष पहोल पणे लहियें ॥ एकेके बारणे जोइ, मंमप एकवीशज होइ ॥ ४६ ॥ इम चिहुं दिसें चोरासी, मंमप रचीया सुप्रकाशी ॥ तिहां रयणमय तोरण माल, दीसे अती जाक ज माल ॥ ४७ ॥ विचें चिहुं दिसें मूलगंनारे, थापी जिनप्रतिमा चारे ॥ मणिमय मूरत सुखकंद, थापी श्रीआदिजिणंद ॥४८॥ गणधर वर पुंमरीक केरी, थापी बिहुं पासें मूरति नलेरी ॥ आदिजिन मूरति काउसगि या, नमिविनमी बे पासें उविया ॥४९॥ मणि सोवन रूप प्रकार, रची समोवसरण सुविचार ॥ चिहुंदिसें चउ धर्म कहंत, थापी मूरति श्रीजगवंत ॥५०॥ नरतेसर जोडी हाथ, मूरत आगल जगनाथ ॥ रायण तलें जि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मणे पासें, प्रभु पगला थाप्या उल्लासें ॥ ५१ ॥ श्री नाभि अने मरुदेवी, प्रासादशुं मूरति करेवी ॥ गज वर खंधे जइ मुक्ति, कीधी आईनी मूरति जक्ति ॥ ॥ ५२ ॥ सुनंदा सुमंगला माता, ब्राह्मी सुंदरी बहिन विख्याता ॥ वली जाइ नवाणु प्रसिद्ध, सवि मूरति मणिमय कीध ॥ ५३ ॥ नीपाइ तीरथ माल, सु प्रतिष्टा करावी विशाल ॥ यक्ष गौमुख चक्केसरी देवी, तीरथ रखवाल उवेवी ॥ ५४ ॥ इम प्रथम उद्धारज कीधो, भरतें त्रिभुवन जस लीधो ॥ इंद्रादिक कीर्त्ति बोले, नही कोइ भरत नृप तोलें ॥ ५५ ॥ शत्रुंजय महातम मांहिं, अधिकार जोजो उछाहिं ॥ जिन प्रतिमा जिनवर सरखी, सद्दहो सूत्र उववाइ निरखी ॥ ५६ ॥ वस्तु ॥ भरतें कीधो भरतेंकीधो, प्रथम उद्धार, त्रिभुवन कीर्त्ति विस्तरी ॥ चंद्र सूरज लगें नाम राख्युं, तिणे समय संघपति केटला हवा ॥ सो इम शास्त्रें भाख्युं, कोडी नवाणु नरवरा, हूआ नेव्यासी लाख ॥ भरत समय संघपति वली, सहस चोरासी भाख ॥ ५७ ॥

॥ ढाल ॥ सातमी ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ भरतपाटें हूआ आदित्ययसा, तसपाटें तस सु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त महायसा ॥ अतिबलनइ अने बलवीर्य, कीरतिवी र्य अने जलवीर्य ॥ ५८ ॥ ए साते हूआ सरखी जो ड, नरत थकी गया पूरव ब कोड ॥ दंमवीर्य आठ में पाट हवो, तिणे उद्धार कराव्यो नवो ॥ ५ए ॥ इं इे सोइ प्रशंस्यो घणु, नाम अजवाल्युं पूरवज तणु ॥ नरत तणीपरें संघवी थयो, बीजो उद्धार ते एहनो कह्यो ॥ ६० ॥ नरत पाटें ए आठे वली, नुवन आरी शामां केवली ॥ इणे आरे सवि राखी रीत, एक न लोपी पूर्वज रीत ॥ ६१ ॥ एकसो सागर वोल्या जि सें, इशानेंइ विदेहमां तिसें ॥ जिनमुख सिद्धगिरि सु णी विचार, तेणे कीधो त्रीजो उद्धार ॥ ६२ ॥ एकको डी सागर वोली गयां, दीगा चैत्य विसस्थल थयां ॥ माहिंइ चोथो सुरलोकेंइ, कीधो चोथो उद्धार गरिंइ ॥ ॥६३॥ सागर कोडी गया दश वली,श्री ब्रह्मेंइ घणु मन रुली ॥ श्री शत्रुंजय तीरथ मनोहार, कीधो तेणे पांच मो उद्धार ॥ ६४ ॥ एक कोडी लाख सागर अंतरें, चमरेंइादिक नवन उद्धरें ॥ छठो इंइ नवनपति त णो, ए उद्धार विमलगिरि नणो ॥ ६५ ॥ पचाश कोडी लाख सागर तणु, आदि अजित विचे अंतर नणु ॥ तेह विचें सूक्ष्म हूवा उद्धार, ते कहेतां नवी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाने पार ॥ ६६ ॥ हवे अजित बीजो जिनदेव, श त्रुंजय सेवा मिसि हेव ॥ सिद्धक्षेत्र देखी गह गह्या, अजितनाथ चोमासुं रह्या ॥ ६७ ॥ जाइ पितराइ अजितजिन तणो, सगर नामे बीजो चक्रवर्त्ति जणो ॥ पुत्र मरण पाम्यो वैराग, इंइे प्रीछवियो महानाग ॥ ६८ ॥ इंइवचन हियडामांहे धरी, पुत्र मरण चिंता परिहरी ॥ जरत तणीपरें संघवी थयो, श्रीशत्रुंजय गिरि यात्रा गयो ॥ ६९ ॥ जरत मणिमय बिंब वि शाल, कस्या कनक प्रासाद जमाल ॥ ते देखी मन हरख्यो घणु, नाम संजास्युं पूर्वज तणु ॥ ७० ॥ जाणी पडतो काल विशेष, रखे विनास ऊपजे रेख ॥ सो वन गुफा पश्चिमदिसि जिहां, रयण बिंब नंमाख्या तिहां ॥ ७१ ॥ करी प्रासाद सयल रूपना, सोवन बिंब करी थापना ॥ कस्यो अजित प्रासाद उदार, एह स गर सत्तम उद्धार ॥ ७२ ॥ पञ्चाश कोडी पंचाणु लाख, उपर सहस पंञ्चोत्तर लाख ॥ एटला संघवी नूपति थया, सगर चक्रवर्त्ति वारें कह्या ॥ ७३ ॥ त्रीस कोडी दश लाख कोडी सार, सागर अंतर करे उद्धार ॥ व्यंतरेंइ आठमो सुचंग, अजिनंदन उपदेश उत्तंग ॥ ७४ ॥ वारें श्रीचंइप्रन तणे, चंइशेखर सुत

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आदर घणे ॥ चंद्रयशा राजा मनरंज, नवमो उद्धार कह्यो शत्रुंज ॥ ७५ ॥ श्रीशांतिनाथ शोलमां स्वाम, र ह्या चोमासुं विमलगिरि गाम ॥ तस सुत चक्रायुध रा जीयो, तिणे दशमो उद्धारज कीयो ॥ ७६ ॥ कीयो शांति प्रासाद उदाम, हवे दशरथ सुत राजाराम ॥ एकादशमो कह्यो उद्धार, मुनिसुव्रत वारें मनोहार ॥ ७७ ॥ नेमिनाथ वारें जोधार, पांमव पांच करे उद्धार ॥ शत्रुंजयगिरि पूगी रली, ए द्वादशमो जा णो वली ॥ ७८ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ राग वैराडी ॥

॥ पांमव पांच प्रगट हवा, खोही अक्षोहणी अ ढार रे ॥ पोतानी पृथवी करी,मायने कीधो जुहार रें ॥ ७९ ॥ कुंतारे माता इम जणे, वत्स सांनलो आ प रे ॥ गोत्र निकंदन तुमे कह्यो, ते केम बूटसो पाप रे ॥ कुं० ॥ ८० ॥ पुत्र कहे सुणो मायडी, कहो अम सोय उपाय रे ॥ ते पातिक किम बूटीयें, वलतुं पजणे मायरे ॥ कुं० ॥ ८१ ॥ श्रीशत्रुंजे तीरथ जइ, सूरज कुंमे स्नान रे ॥ रूपन जिणंद पूजा करो, धरो नगवंतनो ध्यान रे ॥ कुं० ॥ ८२ ॥ माता शिखामण मन धरी, पांमव पांचे ताम रें ॥ हत्या पातक बूटवा,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पोहोता विमलगिरि गाम रे ॥ कुं० ॥ ७३ ॥ जिनवर नक्ति पूजा करी, कीधो बारमो उद्धार रे ॥ नवन नी पायो काष्टमय, लेपमय प्रतिमा सार रे ॥ कुं०॥७४॥ पांमव वीर विचें आंतरुं, वरस चोरासी सहस्स रे ॥ बिहुंसय सीतेर वर्षे हुवो, वीरथी विक्रम नरेस रे ॥७५॥

॥ ढाल ॥ नवमी पूर्वजी देशी ॥

॥ धन्य धन्य शत्रुंजय गिरिवरू, जिहां हवा सिद्ध अनंत रे ॥ वली होसे इणे तीरथें, इम नाखे नगवंत रे ॥ धन्य० ॥ ७६ ॥ विक्रमथी एकसो आठे, वरसें हूउं जावड शाह रे ॥ तेरमो उद्धार शत्रुंजें कखो, थाप्या आदिजिन नाह रे ॥ धन्य० ॥ ७७ ॥ प्रतिमा नरावी रंगशुं, नवा श्री आदिजिणंद रे ॥ श्री शत्रुंज शिखरें थापीया, प्रासादें नयणानंद रे ॥धन्य०॥ ॥ ७८ ॥ पांमव जावड आंत रे, पचवीश कोडी माल रे ॥ लाख पंचाणू ऊपरें, पञ्चोत्तर सहस्स नूपाल रे ॥ धन्य० ॥ ७९ ॥ एटला संघवी हूआ हवे, चउदसमो उद्धार विसाल रे ॥ बारतेरोत्तरें सोय करे, मंत्री बाहडदे श्रीमाल रे ॥ धन्य०॥ ए० ॥ (प्रतिमा नरावी रंगशुं, नवी श्री रुषनजिणंद रे ॥ बीजे शिखरें थपावीया, प्रासाद नयणानंद रे ॥ धन्य० ॥ए१॥)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बारछ्यासीए मंत्रि वस्तपालें,यात्रा शत्रुंजय गिरि सार रे ॥ तिलका तोरणशुं करे, श्री गिरनारे अवतार रे ॥ धन्य० ॥ ए२ ॥ संवत तेर एकोतेरें, श्री उसवंस शणगार रे ॥ शाह समरो इव्य वय करे, पंचदशमो उद्धार रे ॥ धन्य० ॥ ए३ ॥ श्री रत्नाकर सूरिसरू, वड तपगछ सणगार रे ॥ स्वामी रुषनज थापीया, समरे शाहें उदार रे ॥ धन्य० ॥ ए४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ उलालानी ॥ देशीमां ॥

॥ जावड समरा उद्धार, एह वचे त्रण लाख सार ॥ ऊपर सहस चोरासी, एटला समकेत वासी ॥ ॥ ए५ ॥ श्रावक संघपति हूआ, सत्तर सहस जावसार जूआ ॥ क्षत्री शोल सहस जाणु, पन्नर सहस विप्र वखाणु ॥ ए६ ॥ ॥ कणबी बार सहस कहियें, लेउआ नव सहस लहियें ॥ पंच सहस पोसालोस, एटला कंसारा कहीश ॥ ए७ ॥ सवि जिनमति नाव्या, श्री शत्रुंजय यात्रायें आव्या ॥ अवरनी संख्या न जाणु, पुस्तक दीठे ते वखाणु ॥ ए८ ॥ सात सहस मेहर संघवी, जात्रा तलहटीयें तस हवी ॥ बहुश्रुत वचने ए राचुं, ए सवि मानजो साचुं ॥ एए ॥ जरत समराशाह अंतर, संघवी असंख्याता इणीप

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र ॥ केवली विण कुण जाणे, किम छद्मस्थ वखाणे ॥ १०० ॥ नवलाख बंधी बंध काप्या, नवलाख हेम टका तस आप्या ॥ तो देश लहरीयें अन्न चाख्युं, समरे शाहे नाम राख्युं ॥ १०१ ॥ पन्नर सत्यासीये प्रधान, बादरशाहें बहुमान ॥ करमे शाहें जस लीधो, उद्धार शोलमो कीधो ॥१०२॥ इणे चोवीसीयें विमल गिरि, विमलवाहन नृप आदरि ॥ दुःप्रसह गुरु उप देशे, उद्धार छेहेलो करेशे ॥१०३ ॥ एम वली जे गु णवंत, तीरथ उद्धार महंत ॥ लक्ष्मी लही वय करशे, तस बहुभव कारज सरसे ॥ १०४ ॥

॥ ढाल ॥ अगीआरमी ॥ माइ धन्य सुपनतुं ॥

॥ ए देशी ॥

॥ धन्य धन्य शत्रुंज गिरि, सिद्ध खेत्र ए ठाम ॥ कर्मक्षय करवा, धरें वेग जपो नाम ॥ १०५ ॥ चो वीसीयें इणे गिरि, नेमविना त्रेवीश ॥ तीरथ जूइ जाणी, समोसर्या जगदीश ॥ १०६ ॥ पुंडरिक पंच कोडीशुं, द्राविड वारिखिल्ल जोड ॥ काति पूनम सी धा, मुनिवरशुं दशकोड ॥ १०७ ॥ नमि विनमि वि द्याधर, दोय कोडि मुनि संयुत्त ॥ फागुण शुदि दश मी, इणेगिरि मोक्ष पहूत्त ॥ १०८ ॥ श्री ऋष

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नवंसी नृप, नरत असंख्याता पाट ॥ मुकें सरवार्थें, एह गिरि शिवपुर वाट ॥ १०९ ॥ राममुनि नरतादिक, मुनि त्रण कोडीशुं एम ॥ नारदशुं एकाणु, लाख मुनिसर तेम ॥ ११० ॥ मुनि शांब प्रद्युम्नशुं, शाढी आठकोडी साध ॥ वीश कोडीशुं पांन्दव, मुगतें गया निराबाध ॥ १११ ॥ वली थावच्चा सुत, सुक मुनिवर इणे ठाम ॥ एक सहस्ससुं सिध्दा, पंचशत सैलंग नाम ॥ ११२ ॥ इम सिध्दा मुनिवर, कोडाकोडी अपार ॥ वली सीजसे इणे गिरि, कुण कही जाणे पार ॥ ११३ ॥ सात ठठ दोय अठम, गणे एक लाख नवकार ॥ शत्रुंजय गिरि सेवे, तेहने दोय अवतार ॥ ११४ ॥

॥ ढाला ॥ बारमी ॥ वधावानी देशी ॥

॥ मानव नवमें नले लह्युं, लह्योते आरज देश ॥ श्रावक कुल लाधुं नलो, जो पाम्यो रे वाहालो रुषन जिनेशके ॥ ११५ ॥ नेटयोरे गिरिराज, हवे सीधारे मन्हारा वंछित काजके, मुने त्रुठोरे त्रिनुवनपति आजके ॥ नेटयो० ॥ ११६ ॥ ए आंकणी ॥ धन्य धन्य वंस कुलगर तणो, धन्य धन्य नाजि नरिंद ॥ धन्य धन्य मरुदेवा मावडी, जेणे जायोरे वालो रुषन जिणंदके ॥ ने० ॥ ११७ धन्य धन्य शत्रुंजय तीरथ, रायण रूख धन्य धन्य ॥ धन्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पगला प्रभुतणा, जे पेखीरे मोह्युं मुज मनके ॥ भे० ॥
॥११८॥ धन्य धन्य ते जग जीवडा,जे रहे शत्रुंजय पा
स ।। अहनिसि रूषभ सेवा करे,वली पूजेरे मनने उल्ला
सके ॥भे०॥११९॥ आज सखी मुज आंगणे, सुरतरु
फलियो सार ॥ रूषभ जिनेसर वांदीयो,हवे तरियोरे
भवजलनिधि पारके ॥भेटयो०॥१२०॥ शोल अडत्रीशें
आशो मासें, शुदि तेरसी कुज वार ॥ अहम्मदावाद
नयर मांहे,में गायोरे शत्रुंज उद्धारके ॥भेटयो०॥१२१
वडतपगछ गुरु गछपति, श्री धन्नरत्न सूरिंद ॥ तस
शिष्य तसपट जयकरु,गुरु गछपतिरे अमररत्न सूरिंदके
॥ भेटयो० ॥ १२२ ॥ विजयमान तस पटधरू, श्री
देवरत्न सूरीश ॥ श्री धनरत्न सूरिशना,शिष्य पंमितरे
भानुमेरू गणीशके ॥भेटयो०॥१२३॥ तसपद कमल
भमर भणे, नयसुंदर दे आशीश ॥ त्रिभुवन नायक
सेवतां, हवे पूगीरे श्रीसंघजगीशके ॥भेटयो०॥१२४॥

॥ कलश ॥ इम त्रिजग नायक मुक्ति दायक, वि
मल गिरि मंमण धणी ॥ उद्धार शत्रुंज सार गायो,
थुण्यो जिन भक्ते घणी ॥ भानु मेरु पंमित शिष्य दो
य कर ॥ जोडी कहे नयसुंदरो, प्रभु पाय सेवा नित्य
करेवा, देहो दरिशन जयकरो ॥ १२५ ॥ इति ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीगौतमायनमः ॥

अथ श्रीसिद्धगिरिस्तुति प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्री आदीश्वर अजर अमर, अव्याबाध अह नीश ॥ परमातम परमेसरू, प्रणमुं परम मुनीश ॥१॥ जय जय जगपति ज्ञाननान, जासित लोकालोक ॥ शुद्धस्वरूप समाधिमय, नमित सुरासुर थोक ॥ २ ॥ श्रीसिद्धाचल मंडणो, नाभिनरेसर नंद ॥ मिथ्यामति मत नंजणो, नविकुमुदाकर चंद ॥३॥ पूरव नवाणु जस सिरे, समवसर्या जगनाथ ॥ ते सिद्धाचल प्रण मीयें, नक्कें जोडी हाथ ॥ ४ ॥ अनंतजीव इणी गिरि वरें, पाम्या नवनो पार ॥ ते सिद्धा०॥ लहिये मंगल माल ॥ ५ ॥ जस शिर मुकुट मनोहरू, मरुदेवीनो नंद ॥ ते सिद्धा०॥ ऋद्धि सदा सुखवृंद ॥६॥ महिमा जेहनी दाखवा, सुरगुरु पण मतिमंद ॥ ते तीर्थेश्वर प्रणमीयें, प्रगटे सहजानंद ॥ ७ ॥ सत्ताधर्म समारवा, कारण जेह पडूर ॥ते तीर्थे०॥ नाशे अघ सवि दूर॥ ८॥ कर्म काट सवि टालवा, जेहनुं ध्यान हूताश ॥ ते तीर्थे०॥ पामीजें सुखवास ॥ ए ॥ परमानंद दशा ल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हे, जस ध्याने मुनिराय ॥ ते० ॥ पातक दूर पलाय ॥१०॥ श्रद्धानासन रमणता, रत्नत्रयीनुं हेतु ॥ ते०॥ नव मकराकर सेतु ॥ ११ ॥ महापापी पण निस्तर्या, जेहनुं ध्यान सुहाय ॥ ते०॥ सुर नर जस गुण गाय ॥ १२ ॥ पुंडरिक गणधर प्रमुख, सीधासाधु अनेक, ते० ॥ आणी हृदय विवेक ॥ १३ ॥ चंद्रसेखर स्वसा पति, जेहने संगे सिद्ध ॥ ते० ॥ पामीजे निज ऋद्ध ॥ १४ ॥ जल चर खेचर तिरिय सेवे, पाम्या आतम नाव ॥ते०॥ नवजल तारण नाव ॥ १५ ॥ संघयात्रा जेणे करी, कीधा जेणे उद्धार ॥ ते० ॥ लेहीजें गति चार ॥१६॥ पुष्टिशुद्ध संवेग रस, जेहने ध्याने थाय ॥ ते०॥ मिथ्यामति सवि जाय ॥ १७ ॥ सुरतरु सुरमणि सुरगवि, सुरघट सम जसध्याव ॥ ते० ॥ प्रगटे शुद्ध स्वभाव ॥ १८ ॥ सुरलोकें सुरसुंदरी, मली मली थोकें थोक ॥ ते०॥ गावे जेहना श्लोक ॥ १९ ॥ जोगीश्वर जस दर्शने, ध्यान समाधि लीन ॥ ते०॥ हुआ अनुभव रस लीन ॥ २० ॥ मानु गगने सूर्य शशी, दिये प्रदक्षिणा नित्य ॥ ते० ॥ महिमा देखण चित्त ॥२१॥ सुर असुर नर किन्नरा, रहे जे जेहने पास ॥ ते० ॥ पामे लीलविलास ॥२२॥ मंगलकारी जेहने, मृतका

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरिनेट, ते० ॥ कुमति कदा ग्रह मेट ॥ २३ ॥ कुम
ति कौशिक जेहने, देखी जांखा थाय ॥ ते० ॥ सवि
तस महिमा गाय ॥ २४ ॥ सूरज कुंभना नीरथी, आ
धि व्याधि पलाय ॥ ते० ॥ जस महिमा न कहाय
॥ २५ ॥ सुंदर टूंक शोहामणो, मेरुसम प्रासाद ॥
ते०॥ दूर टले विखवाद ॥ २६ ॥ ६व्य भाव वैरी त
णा, जिहां आवे होय शांत ॥ ते० ॥ जाये भवनी
भ्रांत ॥ २७ ॥ जग हितकारी जिनवरा, आव्या एणे
ठाम ॥ ते० ॥ जस महिमा उद्दाम ॥ २८ ॥ नदी श
त्रुंजी स्नानथी, मिथ्यामल धोवाय ॥ ते० ॥ सवि ज
नने सुखदाय ॥२९॥ आठ कर्म जे सिद्धगिरें, न दीये
तीव्र विपाक ॥ ते० ॥ जिहां नवि आवे काक ॥३०॥
सिद्धशिला तपनीय मय, रत्नस्फाटिक खाण ॥ते०॥
पाम्या केवल नाण ॥ ३१ ॥ सोवन रूपा रत्ननी, औ
षधि जात अनेक ॥ ते० ॥ न रहे पातक एक ॥
॥ ३२ ॥ संयमधारी संयमें, पावन होय जिण खे
त्र ॥ ते० ॥ देवा निर्मल नेत्र ॥ ३३ ॥ श्रावक जि
हां शुन ६व्यथी, उद्भव पूजा स्नात्र ॥ ते० ॥ पोषे
पात्र सुपात्र ॥ ३४ ॥ सामिवत्सल पुण्य जिहां, अ
नंत गुणुं कहेवाय ॥ते०॥ सोवन फूल वधाय ॥३५॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुंदर जात्रा जेहनी, देखी हरखे चित्त ॥ ते० ॥ त्रि भुवन मांहे विदित्त ॥ ३६ ॥ पालीताणुं पुर भलुं, सरोवर सुंदर पाल ॥ते०॥ जाए सकल जंजाल॥३७॥ मनमोहन पागे चढे, पग पग कर्म खपाय ॥ ते० ॥ गुण गुणिजाव लखाय ॥ ३८ ॥ जेणे गिरि रूंख सो हामणां, कुंभे निर्मलनीर ॥ ते० ॥ उतारे भवतीर ॥ ३९॥ मुक्तिमंदिर सोपान सम, सुंदर गिरिवर पाज ॥ ते० ॥ लहियें शिवपुर राज ॥ ४० ॥ कर्मकोटि अघ विकटभट, देखी धुजे अंग ॥ ते० ॥ दिनदिन चढते रंग ॥४१॥ गौरी गिरिवर उपरें, गावे जिनवर गीत ॥ ते० ॥ सुखे शासनरीत ॥ ४२ ॥ कवड यक्ष रखवाल जस, अहनीश रहे हजूर ॥ ते० ॥ असूरां राखे दूर ॥ ४३ ॥ चित्त चातुरी चक्केसरी, विघ्न विनासणहार ॥ ते० ॥ संघतणी करे सार ॥ ४४ ॥ सुरवरमां मघवा यथा, ग्रहगणमां जिम चंद ॥ ते० ॥ तिम सवि तीरथ इंद ॥ ४५ ॥ दीठे दुर्गति वारणो, समखो सारे काज ॥ ते० ॥ सवि तीर्थ सिरताज ॥ ४६ ॥ पुंम रिक पंच कोडीसुं, पाम्या केवल नाण ॥ ते० ॥ कर्म तणी होए हाण ॥ ४७ ॥ मुनिवर कोडी दस सहित, द्रविड अने वारिखेण ॥ते०॥ चढिया शिव निश्रेण ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥४८॥नमि विनमि विद्याधरा, दोय कोडी मुनि साथ॥ ते०॥ पाम्या शिवपुर आथ ॥४९॥ रूषभवंसी नरपति घणा, इणे गिरि पोता मोक्ष ॥ ते० ॥ टाल्या घातिक दोष ॥ ५० ॥ राम भरत बिहुं बंधवा, त्रण कोडी मुनियुक्त ॥ ते० ॥ इणेगिरि शिव संपत्त ॥ ५१ ॥ नारद मुनिवर निर्मलो, साधु एकाणुं लाख ॥ ते० ॥ प्रवचन प्रगट ए भाख ॥ ५२ ॥ सांब प्रद्युम्न रूषि कह्या, साढी आठे कोडि ॥ ते०॥ पूर्वकर्म विछोडि ॥ ॥५३॥ थावच्चासुत सहससुं, अणसण रंगें कीध ॥ ते० ॥ वेगे शिवपद लीध ॥ ५४ ॥ शुक परमाचारज वली, एक सहस अणगार ॥ ते० ॥ पाम्या शिवपुर द्वार ॥ ५५ ॥ शैल सूरि मुनि पांचसें, सहित हुआ शिवनाह ॥ते०॥ अंगे धरी उत्साह ॥५६॥ इम बहु सिद्धा इणे गिरें, केतां नावे पार ॥ ते० ॥ शास्त्रमांहे अधिकार ॥ ५७ ॥ बीज इहां समकित तणु, रोपे आतम जोम ॥ ते० ॥ टाले पातक स्तोम ॥ ५८ ॥ ब्रह्म स्त्री भ्रूण गो हत्या, पापें नारित जेह ॥ ते० ॥ पोहोता शिवपुर गेह ॥ ५९ ॥ जग जोतां तीरथ सवे, ए सम अवर न दीठ ॥ते०॥ तीर्थमांहे उकिठ ॥६०॥ धन धन सोरठ देश जिहां, तीरथ मांहे सार ॥ ते०॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जनपदमां शिरदार ॥ ६१ ॥ अहनिश आवत हू कडा, तेपण जेहने संघ ॥ ते० ॥ पाम्या शिव वधू रंग ॥ ६२ ॥ विराधक जिनआणना, तेपण हुआ वि शुद्ध ॥ ते० ॥ पाम्या निर्मल बुद्ध ॥ ६३ ॥ महा म्लेछ साशन रिपु, ते पण हूआ उपशंत ॥ ते० ॥ महिमा देखी अनंत ॥ ६४ ॥ मंत्र योग अंजन सवे, सिद्ध हूवे जिणगाम ॥ ते० ॥ पातकहारी नाम ॥ ६५ ॥ सुमति सुधारस वरसते, कर्मदावानल संत ॥ ते० ॥ उपशम तस उल्लसंत ॥ ६६ ॥ श्रुतधर नितु नितु उप दिशे, तत्त्वातत्त्व विचार ॥ ते० ॥ ग्रहे गुणयुत श्रो तार ॥६७॥ प्रियमेलक गुणगण तणुं, कीर्तिकमला सिंधू ॥ ते० ॥ कलिकालें जगबंधु ॥ ६८ ॥ श्रीशां ति तारण तरण, जेहनी जक्ति विशाल ॥ ते० ॥ दिन दिन मंगलमाल ॥ ६९ ॥ श्वेतध्वजा जस लहकती, जांषे जविने एम ॥ ते० ॥ जमण करो गे केम ॥ ७० ॥ साधक सिद्ध दिसा जणी, आराधे एक चि त्त ॥ ते० ॥ साधन परम पवित्त ॥ ७१ ॥ संघपति थइ एहनी, जे करे जावें यात्र ॥ ते० ॥ तस होये निर्मल गात्र ॥७२॥ शुद्धातम गुण रमणता, प्रगटे जे हने संग ॥ ते० ॥ जेहनो जस अजंग ॥ ७३ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रायणवृक्ष सोहामणो, जिहां जिनेश्वर पाय ॥ ते० ॥
सेवे सुरनर राय ॥ ७४ ॥ पगलां पूजी ऋषननां,
उपशम जेहने चंग ॥ते०॥ समता पावन अंग ॥७५॥
विद्याधरजन मले बहु, विचरे गिरिवर शृंग ॥ ते० ॥
चडते नवरस रंग ॥ ७६ ॥ मालती मोगर केतकी,
परिमल मोहे नृंग ॥ ते० ॥ पूजो नवि एकंग ॥७७॥
अजित जिनेसर जिहां रह्या, चोमासुं गुणगेह ॥
॥ ते० ॥ आणी अविहड नेह ॥ ७८ ॥ शांति जि
नेसर शोलमां, शोल कषाय करि अंत ॥ ते० ॥ च
तुर मास रहंत ॥ ७९॥ नेमिविना जिनवर सवे, आ
व्या जेणे ठाम ॥ ते० ॥ शुद्ध करे परिणाम ॥ ८० ॥
नमि नेम जिनअंतरें, अजित शांतिस्तव कीध ॥ते०॥
नंदिषेण प्रसिद्ध ॥८१॥ गणधर मुनि उवझाय तिम,
लाभ लह्या केइ लाख ॥ ते० ॥ ज्ञानअमृत रस चाख ॥
॥८२॥ नित्य घंटा टंकारवें,रणजणे जह्लरी नाद ॥ते०॥
डुंडुभि मादल वाद ॥ ८३ ॥ जेणे गिरें भरत नरेश्व
रें, कीधो प्रथम उद्धार ॥ ते०॥ मणिमय मूरति सा
र ॥ ८४ ॥ चौमुख चउगति दुःख हरे, सोवनमय
सुविहार ॥ ते० ॥ अक्षय सुख दातार ॥ ८५ ॥ इ
त्यादिक महोटा कह्या, शोल उद्धार सफार ॥ ते० ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लघु असंख्यविचार ॥ ८६ ॥ द्रव्यनाव वैरी तणो, जेहथी थाये अंत ॥ते०॥ शत्रुंजय समरंत ॥ ८७ ॥ पुंमरिक गणधर दूआ, प्रथम सिद्ध इणे गाम ॥ते०॥ पुंमरिक गिरि नाम ॥ ८८ ॥ कांकरे कांकरे इणे गि रि, सिद्ध दूआ सुपवित्त ॥ ते० ॥ सिद्धखेत्र समचि त्त ॥ ८ए ॥ मल द्रव्यनाव विशेषथी, जेहथी जाए दूर ॥ ते० ॥ विमलाचल सुखपूर ॥ ए० ॥ सुरवरा ब हु जे गिरें, निवसे निर्मल गाए ॥ ते० ॥ सुरगिरि ना म प्रमाण ॥ ए१ ॥ परवत सहु मांहे वडो, महागि रि तेणें कहंत ॥ ते० ॥ दर्शन लहे पुण्यवंत ॥ ए२ ॥ पुण्य अनर्गल जेहथी, थाए पाप विनाश ॥ ते० ॥ नाम जलुं पुण्यराश ॥ ए३ ॥ लक्ष्मीदेवी जे जएो, कुंमे कमल निवास ॥ ते० ॥ पद्मनाम सुवास ॥ ॥ ए४ ॥ सवि गिरिमां सुरपति समो, पातक पंक वि लात ॥ ते० ॥ पर्वत इंद्र विख्यात ॥ ए५ ॥ त्रिजुव नमां तीरथ सवे, तेमां महोटो एह ॥ ते० ॥ महाती र्थ जस रेह ॥ ए६ ॥ आदि अंत नहीं जेहनो, कोइ कालें न विलाय ॥ ते० ॥ शाश्वतगिरि कहेवाय॥ए७॥ नइ नला जे गिरिवरें, आव्या होय अपार ॥ ते० ॥ नाम सुनइ संनार ॥ ए८ ॥ वीर्य वधे शुन साधुने,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पामी तीरथ नक्ति ॥ ते० ॥ नामें जे दृढ शक्ति॥एए॥ शिवगति साधे जे गिरे, तेमाटे अनिधान ॥ ते० ॥ मु क्ति निलय गुणखाण ॥ १०० ॥ चंद सूरज समकित धरी, सेव करे शुन चित्त ॥ ते० ॥ पुष्फदंत विदित्त ॥ ॥ १०१ ॥ नी न रहे नव जलथको, जे गिरि लहे नि वास ॥ते०॥ महापद्म सुविलास ॥१०२॥ नूमि धरीजे गिरिवरें,उदधि न लोपे लीह ॥ते०॥ पृथिवीपीठ अनीह ॥१०३॥ मंगल सवि मलवा तणुं, पीठ एह अनिराम ॥ते०॥ नड पीठ जसनाम ॥१०४॥ मूलजस पाताल में,रत्नमय मनोहार ॥ते०॥ पाताल मूल विचार॥१०५॥ कर्मक्षय होये जेहां, होय सिद्ध सुखकेल ॥ ते० ॥ अ कर्मकरे मन मेल ॥१०६॥ कामित सवि पूरण होए, जेहनुं दरिसण पाम ॥ते०॥ सर्वकाम मन गम॥१०७॥ इत्यादिक एकवीश नलां, निरुपम नाम उदार ॥ जे स मखां पातक हरे, आतम शक्ति अनुहार ॥ १०८ ॥

॥ कलश ॥ इम तीर्थ नायक स्तवन लायक, सं शुण्यो श्री सिद्धगिरि ॥ अष्टोत्तरसय गाह स्तवनें, प्रे मनक्तें मनधरी ॥ श्री कल्याण सागर सूरि शिष्यें, शुन जगीशें सुख करी ॥ पुण्यमहोदय सकल मंगल, वेलि सुजसे जयसिरि ॥१०९॥इति॥ सिद्धगिरि स्तुति

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ श्री आदिनाथ विनंतिरूप श्री शत्रुंजय स्तवन ॥

॥ पणमवि सयल जिणंद पाय,मन वंछित कामी॥ सयल तीरथनो राजीउ ए, प्रणमुं सिरनामी ॥ जस दरिशन दुरगति टले ए, नासे सवि रोग ॥ स्वज न कुटुंब मेला मले ए, मनवंछित जोग ॥ १ ॥ नाभि कुमर जगजाणीयें ए, मरुदेवीनो नंद ॥ वदन कमल दीपे अति नलुंए, जाणे पुनम चंद ॥ शत्रुंजा केरो राजीयो ए, सोवन मय काया ॥ उंचपणे सय धनुष पंच, प्रणमें सुर राया ॥ २ ॥ चोशठ इंद्र आदे दइ ए, सुर सेवा सारे ॥ त्रिभुवन तारण वीतराग, नव पार उतारे ॥ चालोने शत्रुंजे जाइयें ए, हरखे कीजें जात्र ॥ सूरज कूंभे स्नानकरी, कीजे निर्मल गा त्र ॥ ३ ॥ खीरोदक सम धोतीया ए, उंढण बादर चीर ॥ कनक कलश साथें लइ, नरीयें निर्मल नीर॥ बावना चंदन घसी घणो ए, कचोला नरीयें ॥ युगा दिदेव पूजा करी ए, नव सायर तरीयें ॥ ४ ॥ चंपक केतकी मालती ए, मांहे दमणो शोहे ॥ कुसुममाल कंठे ठवोए, नवियण मन मोहे ॥ कर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जोडीने वीनवुं ए, सुणो स्वामी वात ॥ धर्मविना नर भव गयो ए, नवि जाण्यो जात ॥ ५ ॥ कामक्रोध मद लोभ वसें, जे में कीधा पाप ॥ प्रेम धरीने मुक्ति द्यो, आदिशर बाप ॥ शांतिनाथ मरुदेवी भुवन, बेहु जमणां सोहे ॥ आगल अदबुद वंदतां ए, भवि जन मन मोहे ॥ ६ ॥ परब एक वडहेठ अछे, पासें पांच देहरी ॥ इंद्र थंभ आगे निरखतां ए, टा ले भव फेरी ॥ कूंतासर कोमेंकरी ए, ललिता सर जोड ॥ नीरविना शोभे नहीं ए, एतो महोटी खोड ॥ ७ ॥ ते आगल राम पोल छे, दीसे अभि राम ॥ पासें वाघण तप तपे ए, तस सीधा काम ॥ खरतरवसहीने विमलवसही, बेहु जिमणां पेखो ॥ मूलकोट मांहे पेसतां ए, पहिलां आदिसरदेखो ॥ ८॥ डावे पासें जिमणे पासें, प्रतिमा अति दीपे ॥ पुंड रिक बिंब अति भलो ए, रूपें त्रिभुवन जीपे ॥ महो टी प्रदक्षिणा देहरे ए, एकसो एक जाणुं ॥ तेम नान्ही हरखे कहुं ए, पञ्चास वखाणुं ॥ ए ॥ कवड यक्ष गोमुख भलो ए, चक्केसरी देवी, शत्रुंजय सानिध करे ए, संघ विघ्न हरेवी ॥ रायण हेठें पगला अछे, आदिसर केरां ॥ भावे भविपूजा करो ए, टालो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नव फेरां ॥ १० ॥ शत्रुंजय बिंब संख्या सुणो ए, पन्नरसेंनें पांसठ ॥ न्हाना महोटा देहरां देहरी, त्र णशें ठाशठ ॥ सीतरिसय जिनवर तणा ए, रूप पा टीयें दीसे ॥ खरतर वसहीमां पेसतां ए, जोतां मन हींसे ॥११॥ एकावन ओरसा जला ए, जेणे शूकड घ सीयें ॥ आदिदेव पूजा करी ए, जइ शिवपुर वसीयें ॥ देहरा उपर गोमटी ए, संख्या सुणो वात ॥ एकसो एकशठ में गणी ए, मूकी परनी तात ॥ १२ ॥ जिन जुवन शिर उपरे ए, पांच चोमुख शोहे ॥ सुर नर नारी सहु तणुं ए, दीठे मन मोहे ॥ त्रण कोट अति मनोहरु ए, जाणे त्रिगडुं दीसे, खरतर वसही मांहे जला ए, जोतां मनडो हींसे ॥ १३ ॥ पांच मूरति पांमव तणी ए, जोतां अजिराम ॥ चौमुख प्रतिमा शोजती ए, सुरकरे गुणग्राम ॥ कलखा जोल चेलणा तलावडी ए, सिद्धसिह्ना तिहां रूडी ॥ सिद्धवड सिद्ध तणु ठाम ए, नही वातज कूडी ॥१४॥ आदिसरनी मूल प्रतिमा, जरतेसरें कीधी ॥ पांचसें धनुषनी रत्नमय, करी मुक्तिज लीधी ॥ ते प्रतिमा शत्रुंजे अछे, पण कोइ न पेखे ॥ जव त्रीजे जे मुक्ति लहे, नर तेहीज देखे ॥१५॥ आदिसरने मूल देहरे,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पावडीयां बत्रीश ॥ नाग मोरनां रूप देखी, नवीकीजें रीश ॥ रायण वडपींपल कदुंए, आंबलीय जगीश ॥ त्रण कोट मांहे महोटा ए, जाडले एकवीश ॥ ॥ १६ ॥ कोट देहराना कांगरा ए, बारशें बाशठ ॥ थंन इग्यारसें में घण्या ए, उपर पांशठ ॥ इसर कुंमने नीमकुंम, जुज कुंम वखाणुं ॥ खोडीआर कुंम शिलार कुंम, तेहनो पार नजाणुं ॥ १७ ॥ सोवन सिद्धरस कूंपीका ए, चोखा फिटकनी खाण ॥ चार पाज शत्रुंजे चढी ए, कीजें कर्मनी हाण ॥ नीली धोली पर्व बेहु, होवे तेहिज नाम ॥ संघ यात्रा करी तिहां मले ए, वीसामा गाम ॥ १८ ॥ आदिपुरो रलियामणु, दीतां पापज नासे ॥ शत्रुंजो नली नदीवहे, शत्रुंजेगिरि पासे ॥ इंद्रपुरी समोवडे ए, पालीताणो नयर ॥ उत्तंग प्रासाद जिहां जिनतणा, दीठे नासे वयर ॥ १९ ॥ मानसरोवर समो वडें ए, ललिता सर सोहे ॥ वनवाडी आराम गाम, इंद्रादिक मोहे ॥ शत्रुंजो शिवपुर समोवडें ए, ज्ञानी इम बोले ॥ त्रिभुवन मांहे तीरथ नहींए, शत्रुंजा गिरि तोले ॥ २० ॥ ए तीरथ संख्या में कही ए, शत्रुंजय गिरि केरी ॥ जे नरनारी जणे गुणे ए,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तस टाले नव फेरी ॥ संकट विकट सवि टले ए, शत्रुंजय गिरिनामे ॥ सकल कर्मनो क्षय करी ए, ते शिवपुर पामे ॥ २१ ॥ तपगछ नायक गुण नि लो ए, गुरु हीरजी राया ॥ मन मोहन विजयसेन सूरि, तेहना प्रणमुं पाया ॥ विमलहरख शिष्य प्रेम विजय, कहे निसुणो देव ॥ नवनव शत्रुंजे गिरि तणी ए, मुज देजो सेव ॥ २२ ॥

॥ कलश ॥ इम थुण्यो स्वामी मुक्तिगामी, आदिजिन जगदेवए ॥ नित्य नमे सुर नर असुर व्यंतर, करे अ हर्निस सेवए ॥ जे नणे नगतें नली युक्तें, तसघर ज यजय कारए ॥ कहे कवियण सुणो नवियण, जिम पामो नव पारए ॥ २३ ॥ इति श्रीशत्रुंजय स्तवनं ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री अमृत विजयजीकृत श्री शत्रुंजय तीर्थमाला प्रारंनः ॥

॥ ढाल पहेली गरबानी देशीमां ॥ जगजीवन जा लम यादवारे, तुमे शाने रोंकोछो रानमा ॥ तुमे स घले कहेवायो छो माधवारे, तुमे० ॥ ए देशी छे ॥

॥ विमलाचल विमला वारूरे, नलें नवियण ने

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टो नावमां ॥ तुमे सेवो ए तीरथ तारुरे, जिम नप डो नवना दावमां ॥ नलें० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जग सघला तीरथनो नायक, हांरे तुमे सेवो शिवसुख दायक रे ॥ नलें० ॥२॥ ए गिरिराजने नयणे निहाली, हांरे तुमे सेवो अवधि दोष टाली रे ॥ नलें० ॥ ३ ॥ मुक्ता सोवन फूलें वधावो, हांरे नमी पूजीने नावना नावो रे ॥नलें०॥४॥ कांकरे कांकरे सिद्ध अनंता, हांरे संनारो पाजें चढंता रे ॥नलें०॥५॥ आदि अजित शांति गौत म केरा, पहेलां पगलां पूजो नलेरां रे ॥ नलें० ॥६॥ आगें धोली परब टुंकें चढियें, तिहां नरतचक्री पद न मीयें रे ॥ नलें० ॥ ७ ॥ नीली परब अंतराले आवे, हांरे नेमी वरदत्त पगला शोहावे रे ॥ नलें० ॥ ८ ॥ आदिभुज नमिकूंम कुमारा, हिंगलाजहडे चढो प्यारा रे ॥ नलें० ॥ ए ॥ तिहां कलिकुंम नमी श्रीपास, हांरे चढो मान मोडी उल्लास रे ॥नलें०॥१०॥ गुणवंतगिरिना गुणगाई, वाला कुंमे विसमो नाई रे ॥नलें०॥ ॥ ११ ॥ तिहांथी मकागाली पंथें धसीयें, प्रनु गढ देखीने उल्लसीयें रे ॥ नलें०॥ १२ ॥ नमीये नारद अइमत्तानी मूरति, वली डाविड वारिखिल्ल सूरतिरे ॥ नलें०॥ १३ ॥ तीरथनूमी देखी सुख जागे, निरखो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हेमकूंभने आगेंरे ॥भलें०॥१४॥ राम भरत शुक सेल
ग स्वामी,हांरे थावच्चा नमुं शिरनामीरे ॥भलें०॥१५॥
भूषणकुंभ वाडी जोइ वंदो, शुकोशल मुनि पद सुख
कंदोरे ॥ भलें० ॥ १६ ॥ आगल हनुमंतवीर कहाये,
हांरे तिहांथी बे वाटें जवायेरे ॥भलें०॥ १७ ॥ भावी
दिसा रामपोल हुं रंजो, साहामी दीसे नदी शत्रुंजो
रे ॥ भ० ॥ १८ ॥ जातां जमणी दिसें वंदो भालो,
मुनि जाली मयाली उवयालीरे ॥ भलें० ॥ १९ ॥
तिहांथी भावी दिसें साहामा शोहावे, नमो देवकी
षट सुत भावेरे ॥ भलें० ॥ २० ॥ इम शुभभाव
थकी उत्कर्षें, रामपोलमां पेसीयें हरखेंरे ॥ भलें० ॥
॥ २१ ॥ कुंतासर पालें नवघण भालो, जेह कीधी
शाह सुगालोरे ॥ भलें० ॥ २२ ॥ धाइ सोपान चढी
अति हरखो, जइ वाघण पोलें निरखोरे ॥ भलें० ॥
॥ २३ ॥ थिरतायें शुभ योग जगावो, कहे अमृत
भावना भावोरे ॥ भलें० ॥ २४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ सीता हरखीजी, ए आयो हनु
मंतको लस्कर,घटाज्युं उमटी आवनकी सीता
हरखीजी हरखीजी ॥ ए देशी ॥
॥ निरखीजी निरखीजी,हूंतो हरखुंरे निरखीजी॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरखीजी हरखीजी, हूंतो प्रणमुं रे हरखीजी ॥ ए आंकणी ॥ अति हरखें संचरतां जोतां, जिनघर ठेला ठेलेंजी ॥ जीव जगाडी सीस नमाडी, आवी हाथीपोलें ॥ हूतो प्रणमुंरें हरखीजी० ॥ १ ॥ आगल पुंमरिक पोलें चढतां, प्रणमुं बे कर जोडीजी ॥ तीरथपतीनुं भुवन निहाली, कर्मजंजीर में तोडी ॥ हूंतो० ॥ २ ॥ मूलगंभारे जातां मानुं, सुकृत सघला तेडीजी ॥ तत्क्षण दुःकृत दूरे पलाया, नाखी कुगति उखेडी ॥ हूं० ॥ ३ ॥ दीठो लाछण मरुदेवीनो, बेठो तीरथ थापीजी ॥ पूरव नवाणुं वार आव्याथी, जग मां कीर्त्ति व्यापी ॥ हुं० ॥ ४ ॥ श्रीआदीश्वर विधिशुं वांदी, बीजा सर्व जुहारुंजी ॥ नेमि विनेमि काउस गिया पासें, जोइ जोइ आतम तारुं ॥ हुं० ॥ ५ ॥ साहामां गजवर खंधे बेठा, भरत चक्रीनी माडीजी ॥ तिम सुनंदा सुमंगला पासें, प्रणमु धन ते लाडी ॥ हुं०॥ ६ ॥ मूल गभारामां जिनमुद्रा, एकें ऊणी पञ्चाशजी ॥ रंगमंमपमां पडिमा एंसी, वंदो भाव उल्लासें ॥ हुं० ॥७॥ चैत्य उपर चोमुख थाप्योछे, फिरती प्रतिमा बाणुंजी ॥ वली गौतम गणधरनी ठवणा, सी तारीफ वखाणुं ॥ हुं०॥ ८ ॥ देहरा बाहेर फरती

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देहरी, चोपन रूडी दीसेजी ॥ तेहमां प्रतिमा एकशो उयाणु, देखी हीयडुं हींसे ॥ हुं० ॥ ए ॥ नीलडी रायण तरुवर हेठल, पीडला प्रनुजीना पायजी ॥ पूजी प्रणमी नावना नावी, ऊलट अंग नमाय ॥ हुं० ॥ १० ॥ तस पद हेठल नाग मोरनी, मूरति बेहु शोहावेजी ॥ तस सुर पदवी सिद्धाचलनां, माहातम मांहे कहावे ॥ हुं० ॥ ११ ॥ साहमां पुंमरिक स्वामी बिराजे, प्रतिमा उवीश संगेंजी ॥ तेहमां एक बौधनी प्रतिमा, टाली नमीयें रंगें ॥ हुं० ॥ १२ ॥ तिहांथी बाहिर उत्तर पासें, प्रतिमा तेर देदारुजी ॥ एक रूपानी अवर धातुनी, पंच तीरथठे वारू ॥ हुं० ॥ ॥ १३ ॥ उत्तर सन्मुख गणधर पगला, चउदसया बावननांजी, तेहमां शांतिजिणंद जुहारी, पुण्या कोड ते मननां ॥ हुं० ॥ १४ ॥ दक्षण पासें सहस कूटने, देखी पाप पलायजी ॥ एक सहस्स चोवीश जिनेसर, संख्यायें कहेवाय ॥ हुं० ॥ १५ ॥ दश क्षेत्रें मली त्रीश चोवीसी, वली विहरमान विदेहेंजी ॥ एकशो सीतेर उत्कृष्ट कालें, संप्रति वीश स्नेहे ॥ हुं० ॥ ॥ १६ ॥ पाठांतर ॥ दश क्षेत्रें मली त्रीस चोवीसी, एक शो शाठ विदेहें जी ॥ उत्कृष्टा विहरमान विनूजी, संप्र

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ति वीश स्नेहें ॥हुं०॥ चोवीश जिननां पंच कल्याणिक, एकशो वीश संभारीजी ॥ शाश्वता चार प्रभु सरवालें, सहसकूट निरधारी ॥हुं०॥१७॥ गोमुख यक्ष चक्केसरी देवी, तीरथनी रखवालीजी ॥ ते प्रभुनां पदपंकज सेवे, कहे अमृत निहाली ॥ हुं० ॥ १८ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ मुनिसुव्रतजिन अरज
अमारी ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिशाथी जिनघर संख्या, जिनवरनी संभलावुं रे ॥ आतमथी उलखाण करीने, ते अहिगाण बतावुं रे ॥ त्रिभुवन तारण तीरथ वंदो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ रायणथी दक्षणने पासें, देहरी एक भलेरी रे ॥ तेहमां चौमुख दोय जुहारुं, टालुं भवनी फेरी रे ॥ त्रिभु० ॥ २ ॥ चौमुख सर्व मलीने बूटा, वीश संख्यायें जाणो रे ॥ बूटी प्रतिमा आठ जुहारी, करीयें जनम प्रमाणो रे ॥ त्रिभु० ॥ ३ ॥ संघवी मोतीचंद पटणीनुं, सुंदर जिनघर शोहे रे ॥ तिहां प्रतिमा उगणीश जुहारी, हीयडुं हरखित होये रे ॥ त्रिभु०॥ ॥ ४ ॥ श्रीसमेत शिखरनी रचनां, कीधीछे भली भांते रे ॥ वीश जिनेसर पगला वंडु, बावीशजिन संघाते रें ॥ त्रिभु० ॥ ५ ॥ कुशलबाइनां चोमुख मांहे,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सत्तर जिन शोहावे रे ॥ अचलगछना देहरा मांहे, बत्रीश जिनजी देखावेरे ॥ त्रिभु० ॥६॥ शाह मूलानां मंडप मांहे, ठेतालीश जिनंदोरे ॥ चोवीश वट्टो एक तिहां ठे, प्रणम्ये परमानंदो रे ॥ त्रिभु० ॥ ७॥ अष्टा पद मंदिरमां जइने, अवधिदोष तजीश रे॥ चार आठ दस दोय नमीने, बीजा जिन चालीश रे ॥ त्रिभु०॥ ॥ ८ ॥ शेठजी सूरचंदनी देहरीमां, नव जिन पडिमा ठाजे रे ॥ घीआ कुंअरजीनी देहरीमां, प्रतिमां त्रण्य बिराजे रे ॥ त्रिभु० ॥ ए ॥ वस्तुपालनां देहरा मांहे, थाप्या रूषभ जिणंद रे ॥ काउसगीआ बे एकत्रीश जिनवर, संघवी ताराचंद रे ॥ त्रिभु० ॥ १० ॥ मेरु शिखरनी ठवणा मध्ये, प्रतिमा बार नजेरी रे ॥ ना णा लींबडीआनी देहरीमां, दश प्रतिमा जोउं हेरी रे ॥ त्रिभु० ॥ ११ ॥ संघवी ताराचंद देवल पासें, देहरी त्रण्यठे अनेरीरे ॥ तेहमां दश जिनप्रतिमा निरखी, थिर परिणिति थइ मेरीरे ॥ त्रिभु० ॥ १२ ॥ पांच लाड्याना देहरा मांहे, प्रतिमा पांचठे महोटी रे ॥ बीजी तेंत्रीश जिन पडिमाठे, एह वात नही खोटीरे ॥ त्रिभु० ॥ १३ ॥ अमदावादीनुं देहरुं क हियें, तेहमां प्रतिमा तेर रे ॥ ते पठवाडे देहरी मांहें,

For Private and Personal Use Only

प्रणमुं आठ सवेर रे ॥ त्रिनु०॥ १४ ॥ शेठ जगन्नाथ जीयें कराव्युं जिनमंदिर नले नावे रे॥ तेह्मां नव जिनपडिमा वंदी, कवी अमृत गुणगावे रे॥त्रिनु०॥१५॥

॥ ढाल चोथी ॥ तुमे पीला पीतांबर पहेर्याजी मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥

॥ रायणथी उत्तर पासेंजी, तीरथना रसीया ॥ जिनवर जिनघर उल्लासेंजी ॥ मुज हीयडे वसीया ॥ ए आंकणी ॥ सहु नांखुं जोइ शिरनामीजी॥ ती० ॥ मुज मननां अंतर जामीजी॥ मु० १ ॥ जिनमुद्रायें रुषन जिणंदोजी ॥ ती० ॥ तिम नरत बाहुबलि वंदोजी ॥ मु० ॥ नमि विनमी काउसगीया सामाजी॥ ती० ॥ ब्राह्मी सुंदरी एक देहरीमांजी ॥मु०॥२॥ पक्ष कृष्ण शुकल ब्रह्मचारीजी ॥ ती० ॥ शेठ विजयने विजया नारीजी ॥ मु० ॥ एहवा कोए न हूआ अवतारीजी ॥ ती० ॥ जाउं तेहनी हुं बलिहारीजी ॥ मु०॥ ॥३॥ गछ अंचल चैत्य कहावेजी ॥ती०॥ वीश पडिमा वंडु नावेजी ॥ मु० ॥ तस मंमप थंना मांहिजी ॥ती०॥ चौद पडिमा वंडुं त्यांहिजी ॥मु०॥४॥ नूषण दासनां देहरा मांहेजी ॥ ती० ॥ तेर पडिमा थापी उछांहेजी ॥ मु० ॥ वाठरडा मंगल खंनातीजी ॥ती० ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तस चैत्यमां त्रण्य शोहातीजी ॥ मु० ॥ ५ ॥ शाकर बाइनी देहरीयें वंदोजी ॥ती०॥ सात प्रतिमा निरखी आणंदोजी ॥ मु० ॥ तिहांथी वली आगल चालो जी ॥ ती० ॥ माता विसोतनुं देहरुं नालोजी ॥ मु०॥ ॥ ६ ॥ पण ते वस्तु पाछें कराव्युंजी ॥ ती० ॥ आठ प्रतिमायें सोहाव्युंजी ॥ मु० ॥ ते उपर चोमुख रा जेजी ॥ ती० ॥ चार शाश्वता जिन बिराजेजी ॥ मु०॥ ॥७॥उगमणो बे ढे देहरी जी ॥ ती० ॥ जिनपडिमा इग्यार नलेरीजी ॥मु०॥ शाहेमचंदनी दखणाती जी ॥ ती० ॥ देहरीमां जोडी सोहातीजी ॥ मु० ॥ ८ ॥ शा रामजी गंधारीयें कीधोजी ॥ ती० ॥प्रासाद उतंग प्रसिद्धोजी ॥ मु० ॥ तिहां चौमुख देखी आणंदजी ॥ ती० ॥ सात प्रतिमा साथें वंदुजी ॥ मु० ॥ ए ॥ खट देहरीढे तस संगेजी ॥ ती० ॥ जिन नमीयें तेंतालीश रंगेजी ॥ मु० ॥ तिहां चोवीश जिननी मांमोजी ॥ ती० ॥ जिन संगे लेइने गाहाडीजी ॥ मु० ॥ १० ॥ मूलकोटनी नमती मांहेजी ॥ ती० ॥ फिरती ढे चार दिशायेंजी ॥ मु० ॥ पांचशें सडसठ सुखकंदोजी ॥ ती० ॥ फिरता सघले जिन वंदोजी ॥ मु० ॥ ११ ॥ मूलकोटना चैत्य निहाले जी ॥ ती० ॥ एकशो पां

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शठ सरवालेजी ॥ मु० ॥ तिहां प्रभु सगवीससें वं
दोजी ॥ती०॥ कहे अमृत ते चिरनंदोजी ॥मु०॥१ श॥

॥ ढाल पांचमी ॥ वात करो वेगला रही
विसरामी रे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे हाथीपोलनी बाहेरें ॥ विसरामी रे ॥ बै
गोखेंठे जिनराज ॥ नमु शिर नामी रें ॥ तेहथी द
क्षण श्रेणीयें ॥ वि० ॥ कहुं जिनघर जिननो साज
॥ न० ॥ १ ॥ कुमर नरिंदें करावीयो ॥ वि० ॥ धन
खरची सार विहार ॥न०॥ बावन शिखरें वंदीयें ॥वि०॥
तिहोत्तर जिन परिवार ॥ न० ॥ २ ॥ वली धनराजने
देहरे ॥ वि० ॥ प्रतिमा वंडु सात ॥ न० ॥ देहरे वर्द्ध
मान शेठ ने ॥ वि० ॥ प्रतिमा सात विख्यात ॥न०॥
॥ ३ ॥ शाह रवजी राधणपुरी ॥ वि० ॥ तेहनुं जिन
घर जोय ॥ न० ॥ तिहां पन्नर जिन दीपता ॥वि०॥
प्रणमो पातिक धोय ॥ न० ॥ ४ ॥ तेहनी पासें रा
जता ॥ वि० ॥ मंदिरमां जिन चार ॥ न० ॥ ति
हांथी आगल जोइयें ॥ वि० ॥ अद्भूत रचना सार ॥
न० ॥ ५ ॥ जगत शेठजीयें कीयो ॥ वि० ॥ त्रण्य
शिखरो प्रासाद ॥ न० ॥ तिहां पन्नर जिन पेखतां ॥
वि० ॥ मुज परणति हूइ आल्हाद ॥ न० ॥ ६ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पासें जुवन जिनराजनुं ॥ वि० ॥ तिहां खट प्रतिमा धार ॥ न० ॥ मूर्त्ता उतारी कीयो ॥ वि० ॥ ते हीर बाईयें सार ॥ न० ॥ ७ ॥ कुंअरजी लाधा तणुं ॥ वि० ॥ दीपे देवल खास ॥ न० ॥ तेंत्रीश जिनशुं था पीया ॥ वि० ॥ सहस्स फणा श्रीपास ॥ न० ॥ ८ ॥ विमल वसहियें चैत्यले ॥ वि० ॥ जूउं नूलिवणिमां चार ॥ न० ॥ वली जमति चोमुख बे मली ॥ वि० ॥ तिहां एक्यासी जिन ढार ॥ न० ॥ ए ॥ नेमीसर चोरी जिहां ॥ वि० ॥ तिहां एकसो सीतेर देव ॥ न० ॥ मूल नायकशुं वंदीयें ॥वि०॥ वली लोकनाल ततखेव ॥न० ॥ १० ॥ विमलवसही पासें अले ॥ वि० ॥ देहरा दो य निहाल ॥ न० ॥ प्रतिमा आठ जुहारीयें ॥ वि० ॥ आतम करी उजमाल ॥ न० ॥ ११ ॥ पुण्य पापनुं पारखुं ॥ वि० ॥ करवाने गुणवंत ॥ न०॥ मोह बारी नामे अले ॥ वि० ॥ तिहां पेसी निकसो संत ॥ न० ॥ १२ ॥ तीरथनी चोकी करे ॥ वि० ॥ वली संघतणी रखवाल ॥ न० ॥ करमांशाहें थापीया ॥ वि० ॥ सहु विघ्न हरे विसराल ॥ न० ॥ १३ ॥ सघले अंगें शोनता ॥ वि० ॥ नूषण जाकजमाल ॥ न० ॥ चर णा चोली पेहेरणे ॥ वि० ॥ शोहे घाटडी लाल गु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लाल ॥ न० ॥ १४ ॥ चतुरनुजा चक्केसरी ॥ वि० ॥ तेहना प्रणमी पाय ॥ न० ॥ संघ शकल उलंघ करे ॥ वि० ॥ बुध अमृत नर गुण गाय ॥ न० ॥ १५ ॥

॥ ढाल छठी ॥ नवितुमे वंदोरे, संखेश्वर जिनराया ॥ ए देशी ॥

॥ नवितुमे सेवो रे,ए जिनवर उपगारी ॥ कोनही एहवो रे, तीरथमां अधिकारी ॥ ए आंकणी ॥ हाथी पोलथी उत्तर श्रेणें, जिनघर जिनजी गाजे ॥ समो सरण सुंदरडे तेहमां, प्रतिमा चार विराजे ॥ नवि० ॥ १ ॥ समोवसरण पडवाडे देहरी, आठे अनोपम शोहे ॥ वीश जिनेसर तेहमां बेगा, नवियणनां मन मोहे ॥ नवि० ॥ २ ॥ रत्नसिंघ जंमारी जेणे, कीधुं देवल खास ॥ तिहां जिन चार संघातें थाप्या,विजय चिंतामणी पास ॥ नवि० ॥ ३ ॥ तेहनी पासें चारडे देहरी, तिहां जिनपडिमा वीश ॥ प्रेमजी वेलजी शा हने देहरे, प्रणामुं पांच जगीश ॥ नवि० ॥ ४ ॥ नथ मल आणंदजीयें कीधुं, जिनमंदिर सुविशाल ॥ तिहां जइ पांच जिनेसर नेटे, मेटे नव जंजाल ॥ नवि० ॥ ५ ॥ वधूसा पटणीने देहरे, अष्टादश जिनराया ॥ पासें देहरी चिनाइ बिंबनी, देश बंगाल कहाया ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नवि० ॥ ६ ॥ अति अद्भूत जिनमंदिर रूडुं, लाधा वोहोरा केरुं ॥ तेहमां जे षट प्रतिमा वंदे, तेहनुं नाग्य नलेरुं ॥ नवि० ॥ ७ ॥ शामीदाचंद लाधा जाणुं, पाटण सहेरनां वासी ॥ जिनमंदिर सुंदर करी पडिमा, पांच ठवी छे खासी ॥ नवि० ॥ ८ ॥ मुणोत जयमल्लजीने देहरे, चोमुख जइने जुहारुं ॥ प्रतिमा दोय दिगंबर नुवने, निरखी नांखुं सारुं ॥ नवि० ॥ ॥ ए ॥ ऋषन मोदीयें प्रासाद कराव्यो, तिहां दश पडिमा वंदो ॥ राजसी शाहनां देहरा मांहे, नेटया शांतिजिणंदो ॥ नवि० ॥ १० ॥ तीरथ संघ तणो रखवालो, यक्ष कपर्दी कहियें ॥ बीजी मात चक्केसरी वंदी, सुख संपति सहु लहियें ॥ नवि० ॥ ११ ॥ न्हाना महोटा नुवन मलीने, बेतालीश अवधारो ॥ संख्यायें जिनजीनी पडिमा, पांचशें शोल जुहारो ॥ नवि० ॥ १२ ॥ इणीपरें सघला चैत्य नमीने, नाही सूरजकुंम, जयणायें सुची अंग करीने, पहेरो वस्त्र अखंम ॥ नवि० ॥ १३ ॥ विधिपूर्वक सामग्री मेली, बहु उपचार संघाते ॥ नानिनंदन पूजी सहु पूजो, जिनगुण अमृत गाते ॥ नवि० ॥ १४ ॥ इति ॥ प्रथम टुंक प्रतिमा संख्या ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ढाल सातमी ॥ नरतनृप नावज्युं ए ॥ ए देशी ॥

॥ बीजो टुंक जुहारीयें ए, पावडीयें चढी जोय ॥ नमो गिरि राजने ए ॥ ए आंकणी ॥ पहेलांते अदबुद देखीने ए, मुज मन अचरिज होय ॥ नमो० ॥ ॥ १ ॥ तिहांथी आगल चालतां ए, देहरी एक निहाल ॥ नमो०॥ तेह ठामे जइ वंदीयें ए, पासजी शांति कृपाल ॥नमो०॥२॥ खोडीयार कुंमने उपरें ए,कीधो प्रासाद उत्तंग ॥नमो०॥ संघवी प्रेमचंद लवजीयें ए, निजधन खरची उमंग ॥न०॥३॥ गोख सटावट कोरणीए, उन्नत रचना जास ॥ न० ॥ ध्वज कलशे करी शोहतोए, दीपे जेम कैलाश ॥ न० ॥ ४ ॥ तपगछ नायक दिनमणीए, विजय जिनेंड् सूरिंद ॥ न० ॥ अठाणु जिन परिवारज्युं ए, थाप्या रुषन्न जिणंद ॥ ॥ नमो० ॥ ५ ॥ संघवी प्रेमचंदें कस्यो ए, जिन मंदिर सुखकार ॥ नमो० ॥ सर्वतोनइ प्रासादमां ए, बिंब नवाणु सार ॥नमो०॥६॥ शाहेमचंद लवजीयें कस्यो ए, देहरो तिहां शुनन्नाव ॥ नमो० ॥ बिंब पचवीश तिहां वंदीयें ए, नवोदधी तारण नाव ॥नमो० ॥ ७ ॥ पाठांतर ॥ संघवी हेमचंदने देहरे ए,तेत्रीश जिनवर द्वार ॥न०॥ वंदी परमानंदथी ए, सफल कस्यो

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवतार ॥न०॥७॥ आगल पांमव वंदीयें ए, पांच रह्या काउसग्ग ॥ नमो० ॥ कुंता माता द्रौपदी ए, गुणम णिनां ते वग्ग ॥ नमो० ॥ ए ॥ खरतर वसहीनी बा रीयें ए, पहेलुं शांतिनवन्न ॥ नमो०॥ बहुतेर जिनशुं वंदीयें ए, चोवीश वट्टा त्रन्न ॥ नमो० ॥ १० ॥ पासें पासजिनेसरु ए, बेउा जुवन मजार ॥ नमो० ॥ चो वीशवट्टो एक तेहमां ए, साधुमुद्रा दोय धार ॥नमो० ॥ ११ ॥ तेहमां नंदिसर थापना ए,बावन जिन परि वार ॥ नमो० ॥ अवधि आशातना टालीने ए, बिंब ओगण्यासी जुहार ॥ नमो० ॥ १२ ॥ एकजिन घरमां थापीया ए, सीमंधर जिनराय ॥ नमो० ॥ प्रतिमा चारशुं वंदीयें ए, परिणति शुद्ध उहराय ॥ नमो० ॥ ॥ १३ ॥ त्रण जिनरायशुं जुवनमां ए,बेउा श्रीअजित जिणंद ॥ नमो० ॥ पासें मात चक्केसरी ए, अष्टनूजा ते अमंद ॥ नमो० ॥ १४ ॥ चौमुख त्रणजे तेहनी ए, प्रतिमा वंदो बार ॥ नमो० ॥ रायणतले चउपादिका ए, तिहां एक पडिमा सार ॥ नमो० ॥ १५ ॥ गण धर पाउका वंदीयें ए, चउदसयां बावन्न ॥ नमो० ॥ पासें बे देहरी दीपती ए, कीधी धन्यते जन्न ॥नमो० ॥ १६ ॥ शाहेमचंद शिखरे कीयो ए, जिनमंदिर सु

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विलास ॥ नमो० ॥ तिहां त्रण पडिमायें नमु ए, श्री मन मोहन पास ॥नमो०॥१७॥ आमण सामा बे देहरां ए, श्रीशांतिनाथनां दोय ॥ नमो० ॥ एकमां प्रतिमा त्रण्य नमुं ए, बीजें पचाश तुं जोय ॥ नमो० ॥ १८ ॥ मूलकोट मांहे दक्षण दिसें ए, देहरी त्रण्य बे जोड ॥ नमो० ॥ तिहां प्रतिमा खट वंदीयें ए, क हे अमृत मद मोड ॥ नमो० ॥ १ए ॥

॥ ढाल आठमी ॥ तपशुं रंग लागो ॥ ए देशी ॥

॥ उत्तर पूरव वचले नागें, देहरी त्रण्य शोहावे रे ॥ हरखीने ते थानक फरसे, वरसी समता नावें ॥ एहने सेवोने, हांरे तुमे सेवो सहु नरनार ॥एहने०॥ एतो मेवो इणे संसार ॥एह०॥ एतो नवजल तारण हार ॥ एहने० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ तेहमां थावच्चा सुत सेलग, सूरि प्रमुख सुखदाइ रे ॥ इणेगिरि सीधा तेहनां पगलां, वंदु सहस्स अढाइ ॥ एहने० ॥ २ ॥ पासें विहार उत्तंग विराजे, रंगमंडप दिसि चार रे ॥ सेठ शिवासोमजीयें कराव्यो, खरची वित्त उदार ॥ एहने० ॥ ३ ॥ अनंत चतुष्टय गुण निपज्याथी, सर खा चारे रूप रे ॥ परमेसर शुन समयें थाप्या, चारे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दिशायें अनूप ॥ एहने० ॥ ४ ॥ ते श्री रूषन जिने सर चौमुख, बीजा जिन त्रेताल रे ॥ शुद्धनिमित्त का रण लही एहवां, हुं प्रणमुं त्रण्य काल ॥ एहने० ॥ ॥ ५ ॥ उपर चोमुख उवीश जिनशुं, देखी डुरित नि कंडुं रे ॥ चोवीश वट्टो एक मलीने, चोपन प्रतिमा वंडुं ॥ एहने० ॥ ६ ॥ साहामा पुंमरिक स्वामी बेठा, पुंमरिक वरणा राजे रे ॥ तस पद वंदी जोडे देहरी, तेहमां थून विराजे ॥ एहने० ॥७॥ रूषन प्रभुने पुत्र नवाणु, आठ नरत सुत संगे रे ॥ एकशो आठ सम य एक सीधा, प्रणमुं तस पद रंगे ॥ एहने० ॥ ८ ॥ फिरति नमति मांहे प्रतिमा, एकशोने उत्रीश रे ॥ तेहमां चोवीश वट्टा साथे, एकशो शाठ जगीश ॥ ॥ एहने० ॥ ए ॥ पोल बाहेर मरुदेवी टूंके, चोमुख एक प्रसिद्धो रे ॥ धनवेलबाइयें निज धन खरची, नरनव सफलो कीधो ॥ एहने० ॥ १० ॥ पश्चिमने मुख साहमां शोहे, देवलमां मनोहारी रे ॥ गजवर खंधे बेठा आई, तीरथनां अधिकारी ॥ एहने०॥११॥ संप्रतिरायें नुवन कराव्युं, उत्तर सनमुख शोहे रे ॥तेह मां अचिरा नंदन निरखो,कहे अमृत मन मोहे ॥१२॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ढाल नवमी ॥ आठ कूवा नव वावडी हुं सेमिसें दे खण जाउं माहाराज, दधीनो दाणी कानुडो॥एदेशी॥

॥ हवे द्वीपावसद्दीमां वाहाला,हांरे तुमे चालो चेतन लाला राज ॥ आज सफल दिन ए रूडो ॥ ए आंक णी ॥ जिनमंदिर जिन मूरत नेटो, नव नवना पा तिक मेटो राज ॥ आज० ॥ १ ॥ तिहां पांच गंनारे जइ अटकलिया, मानु पांच परमेष्टी मलिया राज ॥ आ० ॥ रायण तले पगलां सुखदाइ, तिहां रूषन प्रनुने गाई राज ॥ आ० ॥ २ ॥ नेमिजेनेसर शिष्य प्रवीणा, मुनि नंदिषेण नगीना राज ॥ आ०॥ श्रीश त्रुंजय नेटण आया, तिहां अजित शांति गुण गा या राज ॥ आ० ॥ ३ ॥ तेह तवन महिमायी जो डें, बिहुं जिनवर वंद्या कोडें राज ॥ आ० ॥ तेह मंदिर बे जोडें निरखी, में नेटया बेहु जिन हरखी राज ॥ आ० ॥ ४ ॥ नयर मनोही तणोजे वासी, मनु पारख धर्म अन्यासी राज ॥ आ० ॥ तेणे जि नमंदिर कीधुं सारुं, तिहां त्रण्य प्रतिमाने जुहारुं रा ज ॥ आ० ॥ ५ ॥ एक जुवनमां त्रण्य जिनराजे, बीजामां नेम विराजे राज ॥ आ० ॥ देवल एक देखी डुरित निकंडु, तिहां पास प्रनुने वंडु राज ॥ आ०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ६ ॥ बावन देहरी पाउल फरती, जिनमंदिर शोजा करती राज ॥ आ० ॥ तेहमां अजित जिनेसर राया, में प्रणमीने गुण गाया राज ॥ आ० ॥ ७ ॥ न्हाना महोटा जुवन निहाली, सगतीस गण्या संजाली रा ज ॥ आ० ॥ संख्यायें जिनप्रतिमा जणीयें, पांचसें नेव्यासी गणीयें राज ॥ आ० ॥ ८ ॥ ए तीरथमाला सुविचारी, तुमे यात्रा करो हित कारी राज ॥ आ०॥ दर्शन पूजा सफली थाये, जुन अमृत जावे गाये राज ॥ आ० ॥ ए ॥

॥ ढाल दशमी ॥ मुने संजवजिनशुं प्रीत अ विहड लागी रे ॥ ए देशी ॥

॥ तुमे सिद्धगिरिनां बेहु टूंक, जोइ जूहारो रे ॥ तुमे जूल अनादिनी मूक, ए जव आरो रे ॥ तुमे ध मीं जीव संघात, परणति रंगे रे ॥ तुमे करजो तीरथ यात्र, सुविहित संगे रे ॥ १ ॥ वावरजो एक वार, सचित्त सहु टालो रे ॥ करी पडिक्कमणा दोइ वार, पाप पखालो रे ॥ तुमे धरजो सील शृंगार, जूमि सं थारो रे ॥ अलुआणे पाय संचार, उहरि पालो रे ॥ ॥ २ ॥ इम सुणी आगम रीत, हीयडे धरजो रे ॥ करी सद्दहणा प्रतीत, तीरथ करजो रे ॥ आ दूषम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काले जोय, विघन घणेरां रे ॥ कीधुं ते सीधुं सोय, शुंजे सवेरां रे ॥ ३ ॥ ए हितशिक्षा जाण, सुगुणा हरखो रे ॥ वली तीरथनां अहिगाण, आगें निरखो रे ॥ देवकीनां खट नंद, नमी अनुसरियें रे, आतम शक्ें अमंद, प्रदक्षणा करियें रे ॥ ४ ॥ पहेली जल खा जोल, नरीते जलशुं रे ॥ जाणे केशरनां जब कोल, नमणनां रसशुं रे ॥ पूजे ईंद्र अमोल, रयण पडिमाने रे ॥ ते जल आंख कपोल, ठवो शिर गामें रे ॥ ५ ॥ आगल देहरी दोय, समीपे जाउं रे ॥ तिहां प्रतिमा पगलां दोय, नमी गुण गाउं रे ॥ वली चिह्नणा तलावडी देख, मनमां धारुं रे ॥ तिहां सि ६ सिला संपेख, गुण संनारुं रे ॥ ६ ॥ नाडवे नवि यण वृंद, आपण जाशुं रे ॥ जे थानक अजितजिणं द, रह्या चोमासुं रें ॥ जिहां संब प्रद्युम्न मुनिरंग, थया अविनासी रे ॥ ते धन्य कृतारथ पुण्य, शुणे गुण रासी रे ॥ ७ ॥ ढुंतो सिद्धवड पगला साथ, नमुं हि त काजे रे ॥ इहां शिवसुख कीधुं हाथ, बहु मुनिरा जें रे ॥ इम चढतां चारे पाज, चउगति वारे रे ॥ ए तीरथ जग जिहाज, नव जल तारे रे ॥ ८ ॥ जे ज ग तीरथ संत, ते सहु करियें रे ॥ पण ए गिरि नेटे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनंत, गुणो फल वरियें रे ॥ पुंमरिकादिक नाम, एकवीश लीजें रे ॥ जिम मनवंछित काम, सघला सीजे रे ॥ ए ॥ करियें पंच स्नात्र, रायण आदे रे ॥ तिम रुडी रथ यात्र, प्रभु प्रसादे रे ॥ वली नवाणु वार, प्रदक्षणा फिरियें रे, स्वस्तिक दीपक सार, तेता करीयें रे ॥१०॥ पूजा विविध प्रकार, नृत्य बनावो रे ॥ इम सफल करी अवतार, गुणी गुण गावो रे ॥ निज अनुसारें सक्ति, तीरथ संगे रे ॥ तुमे साधु साहमी भ क्ति, करजो रंगे रे ॥ ११ ॥ पालीताणु धन्य, धन्यते प्राणी रे ॥ जिहां तीरथ वासी जन्न, पुण्य कमाणी रे ॥ प्रह उगमते सूर, रुषनजी नेटो रे ॥ करी दस त्रिक आणंद पूर, पाप समेटो रे ॥ १२ ॥ जिहां ललितासर पाल, नमी प्रभु पगलां रे ॥ मूंगर जणी उजमाल ॥ नरीयें मगलां रे ॥ वचमां नूखण वाव्य, जोइने चा लो रे ॥ तुमे गुण गातां शुन नाव, साथें माहलो रे ॥ १३ ॥ तुमे धूपघटी करमांहिं, जूला देता रे ॥ व डनी गाया मांहिं, ताली लेता रे ॥ आवी तलेटी ग ण, तनु सुची करियें रे ॥ पूरव रीत प्रमाण, पढी परवरियें रे ॥ १४ इणीपरें तीरथ माल, नावे जण से रे ॥ जिणे दीठुं नयण निहाल, विशेषे सुणजे रे ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेसे मंगल माल, कंठेजे धरसे रे ॥ वली सुख संप ति सुविशाल, महोदय वरसे रे ॥ १५ ॥ तपगछ गयण दिणंद, रूपे छाजे रे ॥ श्रीविजयदेव सूरिंद, अधिक दिवाजे रे ॥ रत्नविजय तस शिष्य, पंडित राया रे ॥ गुरुराज विवेक जगीश, तास पसाया रे ॥ १६ ॥ कीधो एह अन्यास, अढार चालीशे रे ॥ उजल फागुण मास, तेरस दिवसे रे ॥ श्रीविमला चल चित्त, धरी गुण गाया रे ॥ कहे अमृत नवियण नित्य, नमो गिरिराया रे ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम तीर थमाला गुण विशाला, विमलगिरिवर राजनी ॥ कही स्वपर हेतें पुण्य संकेते, एह जिनघर साजनी ॥ तप गछ गयण दिणंद गणधर, विजय जिणंद सूरिश्वरू ॥ रची तास राजे पुण्यसाजे, अमृत रंग सुहंकरू ॥ १८ ॥ ॥ इति श्री विमलाचल तीर्थमाला संपूरण ॥

ए तीरथमाला करया पछी प्रेमचंद मोदीनी टूंक, हेमावसही, मोतीशा शेठनी अंजन शलाका सहित तेमनी टुंक, बालाभाइनी टुंक, केशवजी नायकना अं जनशलाका सहित देरासरादिक जे कांइ ए तीर्थमा लानी रचना थया पछी नवा जिनालय थयाछे ते सर्व नी यात्रालु सज्जनोयें यात्रा करवी ए विनंति छे.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ ॥

॥ पंडित श्रीवीरविजयजीकृत

॥ श्रीशत्रुंजय तीर्थना एकवीश नाम संबंधी एक वीश गुण आश्रयी एकवीश खमासमण आपवाना दोहा प्रारंभः ॥

१ सिद्धाचल समरो सदा, सोरठ देश मजार ॥ म णुय जनम पामी करी, वंदो वार हजार ॥ १ ॥ अंग वसन मन भूमिका, पूजोपगरण सार ॥ न्याय द्रव्य विधि शुद्धता, शुद्धि सात प्रकार ॥ २ ॥ कार्त्तिकशुदि पूनम दिने,दश कोटी परिवार ॥ द्राविड वारिखिल्लजी, सिद्ध थया निरधार ॥३॥ तिणे कारण कार्त्तिकी दिने, संघ सकल परिवार ॥ आदिजिन सनमुख रही, ख मासमण बहु वार ॥ ४ ॥ एकवीश नामे वरणव्युं, तिहां पहेलुं अभिधान ॥ शत्रुंजय शुक रायथी, ज नक वचन बहु मान ॥५॥ अहींआं " सिद्धाचल स मरो सदा" ए डुहो प्रत्येक खमासमण दीज कहेवो॥१॥

२ समोसखा सिद्धाचलें, पुंडरीक गणधार ॥ ला ख सवा माहातम कह्युं, सुरनर सभा मजार ॥ ६ ॥

For Private and Personal Use Only

चैत्री पुनमने दिने, करी अणसण एक मास ॥ पांच कोडी मुनि साथसुं, मुक्ति निलयमां वास ॥ ७ ॥ तिणे कारण पुंमरिकगिरि, नामथयुं विख्यात ॥ मन वच कायें वंदीयें, उठी नित्य प्रजात ॥८॥सि०॥

३ वीश कोडीसुं पांमवा, मोक्ष गया इणे ठाम ॥ इम अनंत मुक्तेंगया, सिद्धक्षेत्र तिणे नाम ॥९॥सि०

४ अडशठ तीरथ न्हावतां, अंगरंग घडीएक ॥ तुंबी जल स्नाने करी, जाग्यो चित्तविवेक ॥ १० ॥ चंद्रशेखर राजा प्रमुख, कर्मकठिन मलधाम ॥ अचल पदें विमला थया, तिणे विमलाचल नाम ॥११॥सि०॥

५ पर्वतमां सुरगिरि वडो, जिन अभिषेककराय ॥ सिद्ध हूआ स्नातक पदें, सुरगिरि नामधराय ॥ १२ ॥ अथवा चउदेक्षेत्रमां, ए समो तीरथन एक ॥ तिणे सुरगिरिनामें नमुं, जिहां सुरवास अनेक॥१३॥सि०॥

६ अयसी योजन पृथुलठे, उंचपणे ठवीश ॥ महिमा ए महोटो गिरि, महागिरि नामनमीस॥१४॥सि०॥

७ गणधर गुणवंता मुनि, विश्व मांहे वंदनीक ॥ जेहवो तेहवो संयमी, विमलाचल पूजनीक ॥ १५ ॥ विप्र लोक विखधर समा, दुःखीया भूतल मान ॥ द्रव्य लिंगी कण खेत्र सम, मुनिवर ठीप समान ॥ १६ ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रावक मेघ समा कह्या, करता पुण्यनुं काम ॥ पुण्य निरासि वधे घणी, तेणे पुण्यरासि नाम ॥१७॥सि०॥

८ संयमधर मुनिवर घणा,तप तपता एक ध्यान॥ कर्मवियोगें पामीया, केवल लक्ष्मी निधान॥१८॥ लख एकाणुं शिववख्या, नारदशुं अणगार ॥ नाम नमो तेणे आवमुं, श्रीपदगिरि निरधार ॥ १ए ॥ सि० ॥

ए श्रीसीमंधर स्वामीयें,ए गिरि महिमाविलास॥ इंद्रनी आगें वर्णव्यो,तेणे ए इंद्र प्रकाश॥२०॥सि०॥

१० दश कोटी अणुव्रत धरा, नक्कें जिमाडे सार॥ जैन तीर्थ यात्रा करी, लाज तणो नहीं पार ॥ २१ ॥ तेहथकी सिद्धाचलें,एक मुनिने दान॥ देतां लाज घणो हुवें, महा तीरथ अनिधान ॥२२॥सि०॥

११ प्रायें एगिरिशाश्वतो,रहेशे कालअनंत ॥ शत्रुंजय महातमसुणी,नमो शाश्वतगिरिसंत॥२३॥सि०॥

१२ गौ नारी बालक मुनि, चउ हत्या करनार ॥ यात्रा कर्त्ता कार्त्तिकी, नरहे पाप लगार ॥ २४ ॥ जे परदारा लंपटी, चोरीनां करनार ॥ देवद्रव्य गुरु द्रव्य नां, जे वली चोरणहार ॥२५॥ चैत्री कार्त्तिक पूनमें, करे यात्रा इणे गाम ॥ तप तपतां पातिक गले, तिणे दृढसक्ति नाम ॥ २६ ॥ सिद्धा० ॥१७॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१३ नवनय पामी नीकल्या, थावच्चा सुत जेह ॥
सहस्स मुनिशुं शिव वर्या, मुक्ति निलयगिरि तेह ॥
॥ २७ ॥ सिद्धा० ॥ १३ ॥

१४ चंदा रज बिंदु जणा, उन्ना इणेगिरि श्रृंग ॥
करी वर्णवने वधावियो,पुष्पदंत गिरिरंग ॥२८॥सि०॥

१५ कर्मकलण नवजल तजी, इहां पाम्याशिवस
द्म॥ प्राणी पद्मनिरंजनी,वंदोगिरिमहापद्म॥२९॥सि०॥

१६ शिववहु विवाह उत्सवें, मंडप रचियो सार ॥
मुनिवर वर बेठक नणी,पृथ्वी पीठ मनोहार॥३०॥सि०

१७ श्रीसुनइगिरि नमो, नइते मंगलरूप ॥ जल
तरु रज गिरिवर तणी, शीस चढावे नूप ॥३१॥सि०॥

१८ विद्याधर सुर अपछरा, नदी शत्रुंजी विलास ॥
करता हरता पापने,नजीयें नवि कैलास ॥३२॥सि०॥

१९ बीजा निरवाणी प्रनु, गइ चोवीशी मजार ॥
तस गणधर मुनिमां वडा, नामे कदंब अणगार॥३३॥
प्रनु वचने अणसण करी, मुक्ति पुरिमां वास ॥ नामे
कंदगिरि नमो, तो होय लील विलास ॥ ३४ ॥ सि०॥

२० पाताले जस मूलछे, उज्वलगिरिनुं सार ॥
त्रिकरण योगें वंदतां, अल्प होयें संसार ॥३५॥सि०॥

२१ तन मन धन सुत वल्लना, स्वर्गादिक सुख

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नोग ॥ जे वंदे ते संपजे, शिव रमणी संयोग ॥ ३६ ॥ विमलाचल परमेष्टीनुं, ध्यान धरे खट मास ॥ तेज अपूरव विस्तरे, पूगे सघली आश ॥ ३७ ॥ त्रीजे नव सिद्धि लहे, ए पण प्रायिक वाच ॥ उत्कृष्टा परिणा मथी, अंतर मूहुर्त्त साच ॥ ३८ ॥ सर्व काम दायक नमो, नाम करी उलखाण ॥ श्रीशुभ वीरविजय प्र भु, नमतां कोड कल्याण ॥ ३९ ॥ सिद्धा० ॥ २१ ॥ इति श्रीसिधाचलना एकवीस नाम आश्रयी एकवीश गुणना खमासमण संबंधी दोहा समाप्तः ॥

॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥

॥ विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हितकरं ॥ सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आ दिजिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंग मंडण, प्रवर गुणगणभूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोडि सेवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करति नाटिक किन्नरीगण, गाय जिन गुण मनहरं ॥ निर्झरावली नमे अहनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरिक गणपति सिद्धि साधी, कोडी पण मुनि मनहरं ॥ श्री विमल गिरिवर शृंगसिद्धा ॥ न मो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नंत ए गिरिवरं ॥ मुक्ति रमणी वश्या रंगें ॥ नमो० ॥ ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोक मांहे, विमल गिरिवर तो परं ॥ नही अधिक तीरथ तीर्थपति कहे॥नमो० ॥ ६ ॥ एम विमल गिरिवर शिखर मंडण, दुःखविहंडण ध्याइयें ॥ निजशुद्ध सत्ता साधनार्थे, परम ज्योतिने पाइयें ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परमपदस्थित जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥ ८ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धाचल शिखरे चढी, ध्यान धरो जगदीश ॥ मनवच काय एकाग्र शुं, नाम जपो एकवीश ॥ १ ॥ १ शत्रुंजयगिरि वंदीयें, २ बाहुबलि गुणधाम ॥ ३ मरुदेवने ४ पुंडरिकगिरि, ५ रेवतगिरि विसराम ॥ २ ॥ ६ विमलाचल ७ सिद्धराजजी, नाम ८ भगीरथ सार ॥ ए सिद्धक्षेत्रने १० सहस्र कमल, ११ मुक्तिनिलय जयकार ॥३॥ १२ सिद्धाचल १३ शतकूटगिरि, १४ ढंकने १५ कोडीनिवास ॥ १६ कदंबगिरि १७ लोहित नमो, १८ तालध्वज १ए पुण्यरास ॥४॥ २० महाबल २१ दृढशक्ति सही, ए एकवीशद्द नाम ॥ साते शुद्धि समाचरी, करीयें नित्य प्रणाम ॥ ५ ॥ दग्ध

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शून्यने अविधि दोष, अतिप्रवृत्ति जेह ॥ चार दोष ढंमी नजो, नक्किनाव गुण गेह ॥ ६ ॥ मणुय जन्म पामी करीए, सदगुरु तीरथ योग ॥ श्रीशुनवीरने शा सने, शिवरमणी संयोग ॥ ७ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ पुंमरगिरि स्तवन प्रारंनः ॥

॥ वीरजी आयारे विमलाचलके मेदान, सुरपति नायारे समोवसरण मंमाण ॥ ए आंकणीछे ॥ देसना देवे वीरजी स्वाम, शत्रुंजय महिमां वरणवे ताम ॥ नाखे आउ ऊपर सो नाम, तेहमा नाख्युं रे पुंमरगिरि अनिधान ॥ सोहम इंदोरे तव पूछे बहु मान, किम थयुं स्वामीरे नांखो तास निदान ॥ वीर० ॥ १ ॥ प्रनुजी नांखे सांनल इंद, प्रथमजे हुआ रिषन जिणं द ॥ तेहना पुत्रते नरत नरिंद, नरतना हुआ रे रूष नशेन पुंमरिक ॥ रूषनजी पासे रे देसना सुणी तह कीक, दीक्षा लीधी रे त्रिपदी ज्ञान अधिक ॥ वीर० ॥ ॥२॥ गणधर पदवी पाम्या जाम, द्वादशांगी गुंथी अनिराम ॥ विचरे महियलमां गुण धाम, अनुक्रमे आव्या रे श्रीसिद्धाचल सार ॥ मुनिवर कोडी रे पंच तणे परिवार,अनशन कीधुंरे निज आतमने उपगार ॥ वीर० ॥ ३ ॥ चैत्री पूनम दिवसें एह, पाम्या केव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ल ज्ञान अछेह ॥ शिव सुख वरिया अमल अदेह, पूर्णानंदीरे अगुरु लघु अवगाह ॥ अज अनिवासी रे निजगुण जोगी अबाह, निज गुण करता रे पर पुद्गल नही चाह ॥ वीर० ॥ ४ ॥ तेणे प्रगटयुं पुंडरिकगिरि नाम, सांभलो सोहम देवलोक स्वाम ॥ एहनो महिमां अतिहि उद्दाम, इणेदिन कीजे रे तप जप पूजाने दान ॥ व्रत वली पोसो रे जेह करे निदान, फल तस पामेरे पंच कोडी गुण मान ॥ ॥ वीर० ॥ ५ ॥ जक्तें नव्य जीव जे होय, पंच नवें मुक्ति लहे सोय ॥ तेहमां बाधक ले नही कोय, व्यवहार केरीरे मध्यम फलनी ए वात ॥ उत्कृष्टे योगेंरे अंतरमूहूर्त्त विख्यात,शिव सुख साधेरे निज आतमने अवदात ॥ वीर० ॥६॥ चैत्री पूनम महीमा देख,पूजा पंच प्रकार विशेष ॥ कीजे नही ऊणमि कांइ रेख, इणीपरे भांखेरे जिनवर उत्तम वाण ॥ सांभली बू ज्यारे केइक नविक सुजाण, इणीपरे गायारे पद्म विजय सुप्रमाण ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इति ॥ स्तवनं ॥

॥ अथ श्री शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ श्रीशत्रुंजय मंडण, ऋषन जिणंद दयाल ॥ मरुदेवा नंदन, वंदन करुं त्रण्य काल ॥ ए तीरथ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जाणी, पूरव नवाणु वार ॥ आदिश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार ॥ १ ॥ त्रेवीश तीर्थंकर, चडिया इणेगिरि भावे ॥ ए तीरथनां गुण, सुर असुरादिक गावे ॥ ए पावन तीरथ, त्रिभुवन नही तस तोले ॥ ए तीरथनां गुण, सीमंधर मुख बोले ॥ २ ॥ पुंडरिगिरिमहिमा, आगममां परसिद्ध ॥ विमलाचल भेटी लहियें अविचल ऋद्ध ॥ पंचमी गति पोहोता, मुनिवर कोडाकोड ॥ एणे तीरथ आवी, कर्मविपाक विछोड ॥३॥ श्रीशत्रुंजयगिरि, अहोनिस रक्षा कारी ॥ श्रीआदिजिनेसर, आण हृदयमांधारी ॥ श्रीसंघ विघ्न हर, कविडयक्ष भरपूर ॥ श्रीसंघनां संकट, रवि बुध सागर चूर ॥ ४ ॥ इति स्तुति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुति ॥

॥ श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ सार, गिरिवर मांहें जेम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नवकारज जाणुं, तारा मांहे जेम चंद्र वखाणुं, जलधर मांहे जल जाणुं ॥ पंखीमांहे जेम उत्तम हंस, कुल मांहे जेम ऋषभनो वंश, नाभि तणो जे अंश ॥ क्षमावंत मांहे जेम अरिहंता, तपसूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजय गिरि गुणवंता ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व अभिनंदा, सुमतिनाथ मुख पूनमचंदा, पद्म प्रभ सुख कंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधि, शीतल श्रेयांस सेवो बहुबुद्धि, वासु पूज्य मति सुद्धि ॥ विमल अनंत जिन धर्म ए शांति, कुंथु अर मल्लि नमुं एकांति, मुनिसुव्रत सुद्ध पंथि ॥ नमी पासने वीर चोवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश, सिद्धगिरि आव्या ईश ॥ २ ॥ नरतराय जिन साथें बोले, स्वामी शत्रुंजय गिरि कुण तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ रूषभ कहे सुणो नरतराय, बहरी पालतां जे नर जाय, पातिक नूको थाय ॥ पशु पंखी जे इणगिरि आवे, नवत्रीजे ते सिद्धज थावे, अजरामर पद पावे ॥ जिनमतमें शत्रुंजो वखाण्यो, ते में आगम दिल मांहे आण्यो, सुणतां सुख उर आण्यो ॥ ३ ॥ संघ पति नरत न रेसर आवे, सोवन तणां प्रासाद करावे, मणिमय मूरति भावे ॥ नाभिराया मरु देवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बेहेन विख्याता, मूर्त्ति नवाणुं भ्राता ॥ गोमुख ने चक्रेसरी देवी, शत्रुंजय सार करे नित्य सेवी, तप गच्छ उपर हेवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वर राया, श्रीविजयदेवसूरि प्रणमी पाया, रूषभदास गुण गाया ॥ ४ ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्रीशत्रुंजयना एकवीश नाम कहीयें छैयें ॥

॥ विमलगिरि मुक्तिनिलउ, शत्रुंजो सिद्धखित्त पुंडरि उ ॥ सिरि सिद्धसेहरउ, सिद्धपव्वउ सिद्धराउअ ॥१॥ बाहुबलि मरुदेवो, नगीरहो सहस्सपत्त सयवत्तो ॥ कू डसयहुत्तरउ, नगाहिराउ सहस्सकमलो ॥ २ ॥ ढंको कउडिनिवासो, लोहिच्चो तालुप्पउ कयंबुत्ति ॥ सुरनर मुणिकय नामो, सो विमलगिरि जयउ तित्थं ॥ ३ ॥

अर्थः—१ प्रथम जेने वांदवाथी,फरसवाथी,पूजवाथी तथा गुणस्तुति करवाथी जीव कर्म मल रहित थाय विमल थाय तेथी ए तीर्थनुं नाम विमलगिरि जाणवो.

२ श्रीनरतचक्रवर्त्तिथी आठ पाट आरीशा भुवनमां केवलज्ञान पामी मोक्ष पद पामसे माटे मुक्तिनिलय नाम

३ जीतारी राजा, ए तीर्थ सेवी ७ मास आयंबिल तप करी शत्रुने जीतशे माटे शत्रुंजय नाम जाणवो.

४ ए तीर्थ उपरे कांकरे कांकरे अनंता जीव सिद्धि वर्याछे माटे (सिद्धखित्तके०) सिद्ध क्षेत्र नाम जाणवो.

५ हे पुंडरिक गणधर तमे चैत्र शुदि पुनेमनां दिवसें पांच कोडी मुनिउ सहित सिद्धि पामसो अथवा सर्व तीर्थरूप कमलमां पुंडरिक कमल समान सर्वोत्तम ए तीर्थछे माटे एनुं पुंडरिकगिरि नाम जाणवो.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६ बीजा सर्व तीर्थ तथा अढीद्वीपने विषे जेटला जीव सिद्धि पाम्या तेथी पण घणा जीवो आ तीरथने विषे सिद्धिने पाम्याछे माटे श्रीसिद्ध शेखर नाम.

७ सर्व तीर्थोथकी तथा सर्व पर्वतो थकी ए पर्वत प्रसिद्ध छे माटे एनुं सिद्धपर्वत एवुं नाम जाणवो.

८ घणा राजाउं केवलज्ञान पामी ए तीर्थने विषे सिद्धि पाम्या माटे एनुं सिद्ध राज एवुं नाम जाणवुं.

९ श्री बाहुबल ऋषीश्वरें काउस्सग्ग कर्यो माटे एनुं (बाहुबलि के०) बाहुबलि एवुं नाम जाणवुं.

१० श्री ऋषभ देवनी माता मरुदेवाजीनी टुंक ए तीर्थ उपर छे माटे एनुं(मरुदेवो के०) मरुदेव नाम.

११ ए तीरथनी रक्षा करवा सारुं इंद्रना कहेवा थकी सगरचक्रवर्त्ति, समुद्रनी खाइ लाव्या तेथी एनुं (नगीरहो के०) नगीरथ एवुं नाम जाणवुं.

१२ ए पर्वतनी पछवाडे सहस्र कूट छे माटे एनुं (सहस्सपत्त के०) सहस्र पत्र एवुं नाम जाणवुं.

१३ ए पर्वतनी पछवाडे सेवंत्रानी टुंक छे माटे एनुं (सयवत्तो के०) सयवत्तो एवुं नाम जाणवुं.

१४ ए पर्वतनी पुंठे एकशो आठ कूट अथवा शिखर छे माटे एनुं अष्टोतरशत कूट एवुं नाम जाणवुं.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१५ बीजा सर्व पर्वतोमां ए पर्वत राजा समानछे माटे (नगाहिराउ के०) नगाधिराज नाम जाणवुं.

१६ ए पर्वतनी धुंरे कमलनी पेरें सहस्र टुंकछे माटे (सहस्सकमलो के०) सहस्र कमल नाम जाणवो.

१७ ढंग नामे टुंकछे माटे ढंकगिरि नाम जाणवुं.

१८ कवड नामा यक्षनुं देरासरछे माटे एनुं (कउडिनिवासो के०) कउडिनिवास एवुं नाम जाणवुं.

१९ लोहीतध्वज नामे पर्वत छे माटे एनुं (लोहिच्चो के०) लोहितगिरि एवुं नाम जाणवुं.

२० तालध्वज नामे पर्वतछे माटे एनुं (तालझो के०) तालध्वज एवुं नाम जाणवुं.

२१ अतीत चोवीसीमां निरवाणी नामा तीर्थंकरना कदंब नामे गणधर कोडी मुनि साथें आ तीर्थनी टुंके सिद्धि वस्या माटे कदंबगिरि एवुं नाम जाणवुं.

ए एकवीश नाम ते (सुरनरमुणिकय कें०) देवता, मनुष्य तथा मुनिउना कस्या थका थयां करशे माटे ए तीरथ ऋषन कूटादिकनी परें प्रायें शाश्वतोछे कालें करी वटवध थाय परंतु सर्वथानास न थाय (सो के०) ते विमलगिरि तीर्थ (जयउ के०) जयवंतो वर्त्तो.

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ ॥

॥ श्री सिद्धाचलजीनो रास प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्री रिसहेसर पाय नमी, आणी मन आणंद ॥ रास भणुं रलियामणो, शत्रुंजय सुखकंद ॥ ॥ १ ॥ संवत् चार सीत्तोतरें, हुवा धनेसर सूर ॥ तिणें शत्रुंजय महातम कह्युं, शीलादित्य हजूर ॥ २ ॥ वीरजिणंद समोसखा, शत्रुंजय उपर जेम ॥ इंद्रादिक आगल कह्युं, शत्रुंजय महातम एम ॥ ३ ॥ शत्रुंजय तीरथ सारिखुं, नही बे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तीरथ सघलां जोय ॥ ४ ॥ नामें नव निधि संपजे, दीठे दुरित पलाय ॥ भेटंतां भवभय टले, सेवंतां सुख थाय ॥ ५ ॥ जंबूनामें द्वीप ए, दक्षिण भरत मझार ॥ सोरठ देश शोहामणो, तिहां बे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ नयरी द्वारामती ॥ ए देशी ॥

॥ राग रामग्री ॥

॥ शत्रुंजयने श्रीपुंमरिक, सिद्धखेत्र कहूं तहकीक ॥ विमलाचलने करुं प्रणाम, ए शत्रुंजना एकवीश नाम

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥१॥ए आंकणी॥ सुरगिरि महागिरिने पुण्यराश,श्रीपद पर्वतेंद्रप्रकाश ॥ महातीरथ पूरवे सुखकाम, ए शत्रुंजना एकवीश नाम ॥ २ ॥ शाश्वत पर्वतने दृढशक्ति, मुक्तिनिलो तेणें कीजें नक्ति ॥ पुष्फदंत महापद्म सुगाम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुनद्र कैलास, पाताल मूल अकर्मक तास ॥ सर्वकाम कीजें गुणग्राम ॥ ए० ॥ ४ ॥ शत्रुंजयनां एकवीश नाम,जपेज बेठा अपणे गाम ॥ शत्रुंज यात्रानुं फल लहे, महावीर नगवंत एम कहे ॥ ए० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ शत्रुंजो पहेले अरे, असी जोयण परिमाण ॥ पहोलो मूलें उंच पणे, उव्वीश जोयण जाण ॥ १ ॥ सीत्तर जोयण जाणवो,बीजे आरे विशाल ॥ वीश जोयण उंचो कह्यो, मुज वंदन त्रण काल ॥ २ ॥ शाठ जोयण त्रीजे अरे, पहोलो तीरथ राय ॥ शोल योजन उंचो सही, ध्यान धरुं चित्त लाय ॥ ३ ॥ पच्चाश जोयण पहोल पणे, चोथे अरे मकार ॥ उंचो दश जोयण अचल, नित्य प्रणमे नरनार ॥ ४ ॥ बार योजन पंचम अरे, मूल तणो विस्तार ॥ दोय जोयण उंचो कह्यो, शत्रुंज तीरथ सार ॥ ५ ॥ सात हा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थ उठे अरे, पोहोलो पर्वत एह ॥ उंचो होशे सो ध नुष, शासतुं तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ जिनवरशुं मेरो मन लीनो ॥

॥ ए देशी ॥ राग आशावरी ॥

॥ केवलज्ञानी प्रथम तीर्थंकर, अनंत सिद्धा इण गाम रे ॥ अनंत वली सिद्धशे इणे गामें, तिणें करुं नित्य प्रणाम रे ॥ १ ॥ शत्रुंजे साधु अनंता सिद्धा, सीझशे वलीअ अनंत रे ॥ जेणें शत्रुंज तीरथ नहीं नेटयुं, ते गर्भावास कहंत रे ॥ श० ॥ २ ॥ फागुण शुदि आठमने दिवसें, रुषभदेव सुखकार रे ॥ रा यण रूंख समोसखा स्वामी, पूरव नवाणुं वार रे ॥ ॥ श० ॥ ३ ॥ भरत पुत्र चैत्री पूनम दिन, इण शत्रुं जे गिरि आय रे ॥ पांच कोडिशुं पुंडरीक सीधा, तेणें पुंडरीक कहाय रे ॥ श० ॥ ४ ॥ नमी विनमि राजा विद्याधर, बे बे कोडी संघात रे ॥ फागुण शुदि दशमी दिन सीधा, तेणें प्रभु प्रणमुं प्रभात रे ॥ श० ॥ ५ ॥ चैतर मास वदि चौदशने दिन, नमीपुत्री चोशठ रे ॥ अ णसण करी शत्रुंज गिरि ऊपर, ए सहु सीधा एकठ रे ॥ श० ॥ ६ ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा, इाविडने वारिखिल्ल रे ॥ कार्त्तिक शुदि पूनम दिन सीधा, दश

For Private and Personal Use Only

कोडी मुनि निःशल्य रे ॥ श० ॥ ७ ॥ पांचे पाम्व इ एों गिरि सीधा,नव नारद ऋषिराय रे ॥ संब प्रद्युम्न गया तिहां मुक्तें, आठे कर्म खपाय रे ॥ श० ॥ ८ ॥ नेम विना त्रेवीश तीर्थंकर, समोसस्या गिरि शृंग रे ॥ अजित शांति तीर्थंकर बेहु,रह्या चोमासुं रंग रे ॥श०॥ ॥ ए ॥ सहस्स साधु परिवार संघातें, थावच्चासुत सा ध रे ॥ पांचशें साधुशुं शैलंग मुनिवर, शत्रुंजे शिवसु ख लाध रे ॥ श० ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि शत्रुं जे सीधा, जरतेसरने पाट रे ॥ राम अने जरतादि क सीधा, मुक्ति तणी ए वाट रे ॥ श० ॥ ११ ॥ जाली मयालीने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोडी रे ॥ साधु अनंता शत्रुंजे सीधा, प्रणमुं बे कर जोडी रे॥श०॥१२॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ शत्रुंजना कहुं शोल उद्धार, ते सुणजो सहु को सुविचार ॥ सुणतां आनंद अंग न माय, जन्म जन्मनां पातक जाय ॥ १ ॥ ऋषनदेव अयोध्या पु री, समोसस्या सामी हित करी ॥ जरत गयो वंदनने काज, ए उपदेश दीयो जिनराज ॥ २ ॥ जगमां म्होटो अरिहंत देव, चोशठ इंद्र करे जसु सेव ॥ ते हथी मोहोटो संघ कहाय, जेहने प्रणमे जिनवर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राय ॥ ३ ॥ तेहथी मोहोटो संघवी कह्यो, नरत सु णीने मन गह गह्यो ॥ नरत कहे ते किम पामीयें, प्रभु कहे शत्रुंज यात्रा कीयें ॥ ४ ॥ नरत कहे संघवी पद मुज, ते आपो हुं अंगज तुज ॥ इंहें आण्या अक्षत वास, प्रभु आपे संघवी पद तास ॥ ५ ॥ इंहें तेणी वेला तत्काल, नरत सुनद्रा बेहुने माल ॥ पहे रावी घर संप्रेडीया,सखर सोनाना रथ आपिया ॥६॥ रूषनदेवनी प्रतिमा वली, रत्न तणी कीधी मनरली॥ नरतें गणधर घर तेडीया, शांतिक पुष्टिक सहु तिहां कीया ॥ ७ ॥ कंकोतरी मूकी सहु देश, नरतें तेड्यो संघ अशेष ॥ आव्यो संघ अयोध्या पुरी, प्रथम तीर्थ कर यात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ भक्ति कीधी अति घणी, संघ चलायो शत्रुंजय भणी ॥ गणधर बाहुबली केव ली, मुनिवर कोडी साथें लिया वली ॥९॥ चक्रवर्त्तीनी सघली रूद्धि, नरतें साथें लीधी सिद्धि ॥ हय गय रथ पायक परिवार, तेतो कहेतां नावे पार ॥ १० ॥ नर तेसर संघवी कहेवाय, मारगें चैत्य उद्धरतो जाय ॥ संघ आव्यो शत्रुंजय पास, सहूनी पूगी मननी आश ॥ ११ ॥ नयणें निरख्यो शत्रुंजो राय, मणिमाणिक मोतीशुं वधाय ॥ तिणें गामें रही महोत्सव कीयो,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नरतें आणंदपुर वासीयो ॥ १२ ॥ संघ शत्रुंजय उ
पर चडयो, फरसंतां पातक जडपडयो ॥ केवलज्ञानी
पगलां तिहां, प्रणम्या रायण रूंख जे जिहां ॥ १३ ॥
केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानेंइं आणी सुपवि
त्त ॥ नदी शत्रुंजी शोहामणी, नरतें दीगी कौतुक
नणी ॥ १४ ॥ गणधर देव तणे उपदेश, इंइं वली
दीधो आदेश ॥ आदिनाथ तणो देहरो, नरतें करा
व्यो गिरि सेहरो ॥ १५ ॥ सोनाना प्रासाद उत्तंग, र
नतणी प्रतिमा मनरंग ॥ नरतें श्रीआदेसर तणी,
प्रतिमा थापी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवीनी प्रति
मा वली, माही पूनम थापी रली ॥ ब्राह्मी सुंदरी
प्रमुख प्रासाद, नरतें थाप्या नवले नाद ॥ १७ ॥
एम अनेक प्रतिमा प्रासाद,नरतें कराव्या गुरु प्रसाद ॥
एह नण्यो पहेलो उद्धार,सघलोही जाणे संसार॥१८॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग आशावरी ॥

॥ नरत तणे पाट आतमे, दंमवीर्य थयो रायोजी ॥
नरत तणी परें संघ कीयो, शत्रुंजय संघवी कहायो
जी ॥ १ ॥ शत्रुंज उद्धार सांनलो, शोल मोहोटा
श्रीकारोजी ॥ असंख्याता बीजा वली, ते न कहुं
अधिकारो जी ॥ श० ॥ २ ॥ चैत्य कराव्युं रूपा तणुं,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सोनानां बिंब सारोजी ॥ मूलगां बिंब नंमारीयां, प श्चिम दिशि तेणी वारोजी ॥ श० ॥ ३ ॥ शत्रुंजनो या त्रा करी, सफल कीयो अवतारोजी ॥ दंमवीर्य राजा त णो, ए बीजो उद्धारोजी ॥ श० ॥४ ॥ शो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंमवीरजथो जेवारोजी ॥ ईशानेंइ करा वीयो, ए त्रीजो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ५ ॥ चोथा देव लोकनो धणी, माहेंइ नाम उदारोजी ॥ तिणें शत्रुंज यनो करावीयो,ए चोथो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ६ ॥ पां चमा देवलोकनो धणी, ब्रह्मेंइ समकित धारोजी ॥ तिणें शत्रुंजयनो करावीयो, ए पांचमो उद्धारोजी श० ॥ ७ ॥ नवनपति इंइ तणो कीयो,ए छठो उद्धा रोजी ॥ चक्रवर्त्ती सगर तणो कियो, ए सातमो उद्धा रोजी ॥ श० ॥ ८ ॥ अजिनंदन पासें सुण्यो,शत्रुंजयनो अधिकारोजी ॥ व्यंतरेंइं करावीयो, ए आठमो उद्धा रोजी ॥ श० ॥ ए ॥ चंइप्रन स्वामीनो पोतरो, चंइशे खरनाम मल्लारोजी ॥ चंइयश रायें करावीयो, ए न वमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना, शांतिनाथ सुत विचारोजी ॥ चक्रधर राय क रावीयो, ए दशमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ११ ॥ दशरथ सुत जग दीपतो, मुनिसुव्रत सुवारोजी ॥ श्रीरामचंइ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करावीयो, ए इग्यारमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १२ ॥ पां
मव कहे अमें पापीया, किम छूटुं मोरी मायोजी ॥
कहे कुंती शत्रुंजा तणी, जात्रा कीयां पाप जायोजी ॥
श० ॥ १३ ॥ पांचे पांमव संघ करी, शत्रुंजय चेटयो
अपारोजी ॥ काष्ठ चैत्य बिंब लेपनो, ए बारमो उ
द्धारोजी ॥ श० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाषाणनी, प्रतिमा
सुंदर सरूपोजी ॥ श्रीशत्रुंजनो संघ करी, थापी सकल
सरूपोजी ॥ श० ॥ १५ ॥ अछोतर शो वरसां गयां, वि
क्रम नृपथी जिवारोजी ॥ पोरवाड जावड करावीयो,
ए तेरमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १६ ॥ संवत बार तेरो
त्तरें, श्रीमाली सुविचारोजी ॥ बाहडदे मुहतें करावी
यो, ए चौदमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १७ ॥ संवत तेर
एकोत्तरें, देश लहेर अधिकारोजी ॥ समरे शाह क
रावीयो, ए पंदरमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १८ ॥ संवत
पन्नर सत्त्याशीयें, वैशाक शुदि शुन वारोजी ॥ करमे
दोशी करावीयो, ए शोलमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १९ ॥
सांप्रतकालें शोलमो, ए वरते छे उद्धारोजी ॥ नित्य
नित्य कीजें वंदना, पामीजें नवपारो जी ॥ श० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली शत्रुंज महातम कहुं, सांनलो जिम छे ते

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

म ॥ सूरि धनेसर इम कहे, महावीरें कह्युं एम ॥१॥ जेहवो तेहवो दर्शनी, शत्रुंजे पूजनीक ॥ नगवंतनो जेख मानतां, लाज होवे तहकीक ॥ २ ॥ श्री शत्रुंजा उपरें, चैत्य करावे जेह ॥ दल परिमाण समुं लहे, प ल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ शत्रुंजा उपर देहरुं, नवुं नी पावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठ गणुं फल हो य ॥ ४ ॥ शिर उपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्त्तीनी स्त्री थइ शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥ का ती पूनेम शत्रुंजें, चडीने करे उपवास ॥ नारकी शो सागर तणो, करे कर्मनो नाश ॥ ६ ॥ काती परव महोटुं कह्युं, जिहां सोधा दश कोड ॥ ब्रह्म स्त्री बा लक हत्या, पापथी नाखे छोड ॥ ७ ॥ सहस्र लाख श्रावक जणी, जोजन पुण्य विशेष ॥ शत्रुंज साधु प डिलाजतां, अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ धन्य धन्य गज सुकुमारने ॥ ए देशी ॥

॥ शत्रुंजें गयां पाप टूटोयें, लोजें आलोयण ए मोजी ॥ तप जप कोजें तिहां रही, तीर्थंकर कह्युं तेमोजी ॥श०॥१॥ जिण सोनानी चोरी करी,ए आलो यण तासोजी ॥ चैत्रीदिन शत्रुंजय चढी, एक करे उ पवासोजी ॥ श० ॥ २ ॥ रत्नतणी चोरी करी, सा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त आंबिल शु६ थायजी ॥ काती सात दिन तप की यां, रत्नहरण पाप जायजी ॥ श० ॥ ३ ॥ कांसा पीतल तांबा रजतनी, चोरी कीधी जेणजी ॥ सात दवस पुरिमड्ढ करे,तो टूटे गिरि एणजी ॥ श० ॥४॥ मोती प्रवालां मुगीया, जेणें चोखां नरनारोजी ॥ आं बिल करी पूजा करे, त्रण टंक शु६ आचारो जी ॥ ॥ श० ॥ ५ ॥ धान्य पाणी रस चोरीयां, जे नेटे सि ६ खेत्रोजी ॥ शत्रुंज तलहटी साधुने, पडिलाने शुन चित्तोजी ॥ श० ॥ ६ ॥ वस्त्राभरण जेणें हखां, ते टू टे इणे मेलोजी ॥ आदिनाथनी पूजा करे, प्रह उठी बहु वेहेलोजी ॥ श० ॥ ७ ॥ देवगुरुनुं धन जे हरे, ते शु६ थाये एमोजी ॥ अधिकुं द्रव्य खरचे तिहां, पाले पोषे बहु प्रेमोजी ॥ श० ॥ ८ ॥ गाय नेंश गो धा मही, गजग्रह चोरण हारोजी ॥ टूटे ते तप तीर थें, अरिहंत ध्यान प्रकारोजी ॥ श० ॥ ए ॥ पुस्तक देहरां पारकां, तिहां लखे आपणां नामोजी ॥ टूटे छमासी तप कीयां, सामायिक तिण छामोजी ॥श०॥ ॥ १० ॥ कुंवारी परिव्राजिका, सधव विधव गुरु ना रोजी ॥ व्रत नांजे तेहने कह्युं, छमासी तप सारो जी ॥ श० ॥ ११ ॥ गो विप्र बालक रूपि, एहनो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घातक जेहोजी ॥ प्रतिमा आगें आलोचतां, छूटे तप करी एहोजी ॥श० ॥ १२॥ इति॥

॥ ढाल ७ठी ॥ ऋषभ प्रभुजीयें ॥ ए देशी ॥

॥ संप्रतिकालें शोलमो ए, ए वरते छे उद्धार ॥ शत्रुंजय यात्रा करुं ए, सफल करुं अवतार ॥श०॥१॥ छहरि पालतां चालीयें ए, शत्रुंज केरी वाट ॥ पाली ताणे पोहोंचीयें ए, संघ मल्या बहु थाट ॥श०॥२॥ ललित सरोवर पेखीयें ए,वली सत्तानी वाव ॥ तिहां विसामो लीजीयें ए, वडने चोतरे आव ॥ श० ॥ ३ ॥ पालीताणे पावडी ए,चढीयें उठी प्रभात ॥ शेत्रुंजी नदी सोहामणी ए, दूरथकी देखात ॥ श० ॥ ४ ॥ चढियें हिंगलाजने हडे ए,कलिकुंड नमीयें पास ॥ बारी मां हे पेशीयें ए, आणी अंग उल्लास ॥ श० ॥ ५ ॥ मरुदेवी टुक मनोहरु ए, गजचढी मरुदेवी माय ॥ शांतिनाथजिन शोलमो ए, प्रणमीजें तसु पाय ॥ श०॥ ६ ॥ वंश पोरवाडें परगडो ए, सोमजी शाह मलार ॥ रूपजी संघवी करावीयो ए, चोमुख मूल उद्धार ॥ श०॥ ॥७॥ श्री जिनराज सूरिसरू ए,खरतर गछ गणधार ॥ स्वहाथें जेणें प्रतिष्ठा करी ए, शुभ दिवस शुभ वार ॥श०॥८॥ चोमुख प्रतिमा चरचीयें ए,जमतीमांहे भलां

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिंब ॥ पांचे पांमव पूजीयें ए, अदबुद आदि प्रलंब ॥ श० ॥ ए ॥ खरतर वसही खांतशुं ए, बिंब जुहारुं अनेक ॥ नेमनाथ चोरी नमुं ए,टालुं अजग उद्वेग ॥ ॥ श० ॥ १० ॥ धर्म द्वारमांहे नीसरुं ए, कुगति करुं अति दूर ॥ आवुं आदिनाथ देहरे ए, कर्म करुं चक चूर ॥ श० ॥ ११ ॥ मूलनायक प्रणमुं मुदा ए, आदि नाथ नगवंत ॥ देव जुहारुं देहरे ए,नमतीमांहे नगवं त ॥ श० ॥ १२ ॥ शत्रुंजा उपर कीजीयें ए, पांचे ठामें स्नात्र ॥ कलश अष्टोत्तर शो करी ए, निर्मल नीरशुं गा त्र ॥ श० ॥१३॥ प्रथम आदीसर आगलें ए, पुंमरीक गणधार ॥ रायण तल पगलां वली ए,शांतिनाथ सुख कार ॥ श० ॥ १४ ॥ रायण तले पगलां नमुं ए, चो मुख प्रतिमा चार ॥ बीजी नूमें बिंब वली ए, पुंमरी क गणधार ॥ श० ॥ १५ ॥ सूरजकुंम निहालीयें ए, अति नली उलखा जोल ॥ चेलण तलाइ सिद्धशिला ए, अंगें करीशुं उल्लोल ॥ श० ॥ १६ ॥ आदिपुर पा जें उतरुं ए,सिद्धवड लहुं विश्राम ॥ चैत्य प्रवाडी इणी परें करी ए, सीधां वंछित काम ॥ श० ॥ १७ ॥ जा त्रा करी शत्रुंज तणी ए, सफल कीयो अवतार ॥ कु शल क्षेमशुं आवीया ए, संघ सहु परिवार ॥ श० ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ १८ ॥ शत्रुंजय महातम सांजली ए, रास रच्यो अनुसार ॥ जे जवि गावे जावशुं ए, आनंद होए अपार ॥ श० ॥ १ए ॥ शत्रुंजय रास शोहामणो ए, सांजलजो सहु कोय ॥ घर बेगं जणे जावशुं ए,तसु जात्रा फल होय ॥ श० ॥ २०॥ जणशाली थिरु अतिजलो ए, दयावंत दातार ॥ शत्रुंजय संघ करावीयो ए, जेसलमेर मकार ॥ श० ॥ २१ ॥ शत्रुंजय महात्म्य ग्रंथथी ए,रास रच्यो अनुसार ॥ जाव जक्तें जणतां थकां ए, पामीजें जव पार ॥ श० ॥ २२ ॥ संवत शोल बयाशीयें ए, श्रावणशुदि सुखकार ॥ रास जण्यो शत्रुंजा तणो ए,नगर नागोर मकार ॥ श० ॥ २३ ॥ गिरुउ गन्न खरतर तणो ए, श्रीजिनचंद सूरीश ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना ए, सकलचंद सुजगीश ॥ श०॥२४॥ तास शिष्य जग जाणीयें ए, समय सुंदर उवकाय, रास रच्यो तेणें रूअडो ए, सुणतां आनंद थाय ॥ ॥ श० ॥ २५ ॥ इति श्री शत्रुंजयरासः संपूर्णः

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

॥ शेत्रुंजो जोवानुं हो जोर बे जी ॥ राज जोर बे जी राज ॥ नानीनो किशोर ॥ महाराजा ॥ शेत्रुंजो० ॥ ॥ १ ॥ सोरठ देशनो साहेबोजी राज,शेत्रुंजानो शण

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गार ॥ महाराजा ॥ कलिमल करिकुल केशरीजी राज, मरुदेवी मात मल्हार ॥ महाराजा॥शेत्रुं०॥२॥ तीरथ तीरथ शुं करोजी राज, अवर छे आल पंपाल ॥ म हाराजा ॥ त्रिभुवन तीरथ एक छे जी राज, श्रीसिद्धा चल सुविशाल ॥ महाराजा ॥ शेत्रुं० ॥ ३ ॥ जाग्य होय तो जेटीयें जी राज, विमलाचल वारोवार ॥ म हाराजा॥ जेणें अेक वार दीठो नहींजी राज, अफल तेहनो अवतार ॥ महाराजा ॥ शेत्रुं० ॥ ४ ॥ सत्तर नेव्याशीया समेजो राज, जोर बनी उतंग ॥ महारा जा ॥ प्रतिष्ठान पुरें पूज्या तणीजी राज, अधिक आंगीनो उमंग ॥ महाराजा ॥ शेत्रुं० ॥ ५ ॥ चैतर शुदि बारस दिनेजी राज, उदयरतन उवझाय ॥ म हाराजा ॥ परिकरशुं प्रभु पेखीनेजी राज, गेलेशुं गु ण गाय ॥ महाराजा ॥ शेत्रुं०॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ जे जे स्थानकें शाश्वत जिनालय छे ते ते स्थानकोनां नाम तथा त्यां जिनमंदिरनी संख्या अने प्रत्येक मंदिरमां प्रतिमाजीनी संख्या तथा एकत्र प्रति माजीनी संख्या, प्रतिमाजीना शरीरनुं प्रमाण, मंदिरनी लंबाइ तथा चोडाइ अने उंचपणाना प्रमाणनुं यंत्र लखीयें छैयें जेथी वंदना करवाने अनुकूल थाय.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थानकनां नाम.	जिनमंदिर नी संख्या.	प्रत्येक प्रतिमा जी सं०	सर्व प्रतिमाजीनां सरवालानी संख्या.
अनुत्तरमें	५	१२०	६००
ग्रैवेयकमें	३१८	१२०	३८१६०
सौधर्मे	३२ लाख	१८०	५७६००००००
ईशानदेव०	२८ लाख	१८०	५०४००००००
सनत्कुमारें	१२ लाख	१८०	२१६००००००
माहेंद्रमें	८ लाख	१८०	१४४००००००
ब्रह्मलोकें	४ लाख	१८०	७२००००००
लांतकमें	५० हजार	१८०	९००००००
शुक्रदेव०	४० हजार	१८०	७२०००००
सहस्त्रारमें	६ हजार	१८०	१०८००००
आनतमें	२००	१८०	३६०००
प्राणातमें	२००	१८०	३६०००
आरणमें	१५०	१८०	२७०००
अच्युतमें	१५०	१८०	२७०००
असुरकुमारें	६४ लाख	१८०	११५२००००००
नागकुमारें	८४ लाख	१८०	१५१२००००००
सुवर्णकुमारें	७२ लाख	१८०	१२९६००००००

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिमाजीनां शरीरप्रमाण	मंदिरनी लंबाइनुं प्रमाण.	मंदिरनी चोडाइनुं प्रमाण.	मंदिरनां उंचपणानुं प्रमाण.
धनुष १॥।	योजन १००	योजन ५०	योजन ७२
धनुष १॥।	योजन १००	योजन ५०	योजन ७२
धनुष १॥।	योजन १००	योजन ५०	योजन ७२
धनुष १॥।	योजन १००	योजन ५०	योजन ७२
धनुष १॥।	योजन १००	योजन ५०	योजन ७२
धनुष १॥।	योजन १००	योजन ५०	योजन ७२
धनुष १॥।	योजन १००	योजन ५०	योजन ७२
धनुष १॥।	योजन १००	योजन ५०	योजन ७२
धनुष १॥।	योजन १००	योजन ५०	योजन ७२
धनुष १॥।	योजन १००	योजन ५०	योजन ७२
धनुष १॥।	योजन १००	योजन ५०	योजन ७२
धनुष १॥।	योजन १००	योजन ५०	योजन ७२
धनुष १॥।	योजन १००	योजन ५०	योजन ७२
धनुष १॥।	योजन १००	योजन ५०	योजन ७२
धनुष १॥।	योजन ५०	योजन २५	योजन ३६
धनुष १॥।	योजन २५	योजन १२॥	योजन १८
धनुष १॥।	योजन २५	योजन १२॥	योजन १८

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थानकनां नाम.	जिनमंदिरनी संख्या.	प्रत्येक प्रतिमाजी सं०	सर्व प्रतिमाजीनां सरवाळानी संख्या.
विद्युत्कुमारें	७६ लाख	१८०	१३६८००००००
अग्निकुमारें	७६ लाख	१८०	१३६८००००००
द्वीपकुमारें	७६ लाख	१८०	१३६८००००००
उदधिकुमारें	७६ लाख	१८०	१३६८००००००
दिशिकुमारें	७६ लाख	१८०	१३६८००००००
वायुकुमारें	९६ लाख	१८०	१७२८००००००
स्तनितकुमारें	७६ लाख	१८०	१३६८००००००
जंबुवृक्षे	११७०	१२०	१४०४००
कंचनगिरियें	१०००	१२०	१२००००
कुंडे	३८०	१२०	४५६००
दीर्घवैताढ्यें	१७०	१२०	२०४००
महानदीयें	७०	१२०	८४००
गजदंतें	२०	१२०	२४००
नंदीश्वर द्वीपें	५२	१२४	६४४८
भद्रशालवनें	२०	१२०	२४००
नंदनवनें	२०	१२०	२४००
सोमनसवनें	२०	१२०	२४००

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिमाजीनां शरीरप्रमाण	मंदिरनी लंबाइनुं प्रमाण.	मंदिरनी चोडाइनुं प्रमाण.	मंदिरनां ऊंचपणानुं प्रमाण.
धनुष १।।।	योजन २५	योजन १२॥	योजन १८
धनुष १।।।	योजन २५	योजन १२॥	योजन १८
धनुष १।।।	योजन २५	योजन १२॥	योजन १८
धनुष १।।।	योजन २५	योजन १२॥	योजन १८
धनुष १।।।	योजन २५	योजन १२॥	योजन १८
धनुष १।।।	योजन २५	योजन १२॥	योजन १८
धनुष १।।।	योजन २५	योजन १२॥	योजन १८
धनुष ५००	गाउ १	गाउ० ॥	धनुष १४४०
धनुष ५००	गाउ १	गाउ० ॥	धनुष १४४०
धनुष ५००	गाउ १	गाउ० ॥	धनुष १४४०
धनुष ५००	गाउ १	गाउ० ॥	धनुष १४४०
धनुष ५००	गाउ १	गाउ० ॥	धनुष १४४०
धनुष ५००	योजन ५०	योजन २५	योजन ३६
धनुष ५००	योजन १००	योजन ५०	योजन ७२
धनुष ५००	योजन ५०	योजन २५	योजन ३६
धनुष ५००	योजन ५०	योजन २५	योजन ३६
धनुष ५००	योजन ५०	योजन २५	योजन ३६

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

स्थानकनां नाम.	जिनमंदिर नी संख्या.	प्रत्येक प्रतिमा जी सं०	सर्व प्रतिमाजीनां सरवाजानीसंख्या
पंमगवनें	३०	१२०	३४००
वक्षस्कारायें	८०	१२०	९६००
कुलगिरियें	३०	१२०	३६००
दिग्गजें	४०	१२०	४८००
इहें	८०	१२०	९६००
यमकपर्वतें	३०	१२०	३४००
वृत्तवैताढ्यें	३०	१२०	३४००
राजधानीयें	१६	१२०	१९२०
मेरुचूलिका	५	१२०	६००
रुचकें	४	१२४	४९६
कुंमल द्वीपें	४	१२४	४९६
इक्षुकारें	४	१२०	४८०
मानुष्योत्तरें	४	१२०	४८०
कुरुदसगें	१०	१२०	१२००
व्यंतरमां	असंख्यात.	१८०	असंख्याती.
ज्योतिष्कें	असंख्यात.	१८०	असंख्याती.
ज्योतिष्करा.	असंख्यात.	१८०	असंख्याती.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रतिमाजीनां शरीरप्रमाण.	मंदिरनी लंबाइनुं प्रमाण.	मंदिरनी चोडाइनुं प्रमाण.	मंदिरनां उंचपणानुं प्रमाण.
धनुष ५००	योजन ५०	योजन २५	योजन ३६
धनुष ५००	योजन ५०	योजन २५	योजन ३६
धनुष ५००	योजन ५०	योजन २५	योजन ३६
धनुष ५००	गाउ १	गाउ० ॥	धनुष १४४०
धनुष ५००	गाउ १	गाउ० ॥	धनुष १४४०
धनुष ५००	गाउ १	गाउ० ॥	धनुष १४४०
धनुष ५००	गाउ १	गाउ० ॥	धनुष १४००
धनुष ५००	गाउ १	गाउ० ॥	धनुष १४४०
धनुष ५००	गाउ १	गाउ० ॥	धनुष १४४०
धनुष ५००	योजन १००	योजन ५०	योजन ७२
धनुष ५००	योजन १००	योजन ५०	योजन ७२
धनुष ५००	योजन ५०	योजन २५	योजन ३६
धनुष ५००	योजन ५०	योजन २५	योजन ३६
धनुष ५००	योजन ५०	योजन २५	योजन ३६
धनुष ५००	योजन १ २॥	योजन ६।	योजन ९
धनुष ५००	०	०	०
धनुष ५००	योजन १ २॥	योजन ६।	योजन ९

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ ॥

॥ श्रचोवीशजिननां एकशोने वीश कल्याणिकनी तिथि प्रारंन ॥

॥ तिहां प्रत्येक तीर्थंकरनां पांच पांच कल्याणिक डे ते एकेका कल्याणिकने दिवसें गणणो गणाय डे ते आवी रीतें के जे दिवसें श्रीतीर्थंकर परगतिथी च वीने माताना उदरने विषे आवेडे ते दिवसें चवन कल्याणिक कहेवाय डे तेवारें " परमेष्टीनमः " एवो जाप जपाय डे तथा जे दिवसें श्री तीर्थंकरनुं जन्म थाय डे ते दिवसें जन्मकल्याणिक कहेवाय डे ते वारे " अर्हतेनमः " एवो जाप जपाय डे तथा जे दिवसें तीर्थंकर दीक्षा लइ मुनिपणो धारण करे डे ते दिवसें दीक्षा कल्याणिक कहेवाय डे तेवारे " ना थायनमः " ए जाप जपाय डे तथा जे दिवसें श्री ती र्थंकर नगवानने केवल ज्ञान उत्पन्न थाय डे तेदिव सें संपूरण ज्ञान कल्याणिक कहेवाय डे तेवारें "सर्व ज्ञायनमः " ए जाप जपायडे तथा जे दिवसें श्रीती र्थंकर नगवानने मोक्षनी प्राप्ति थायडे ते दिवसें नि रवाण कल्याणिक कहेवाय डे तेवारें " पारंगतायन मः " ए जाप जपाय डे ए रीतें पांच कल्याणिक एके

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

का तीर्थंकरनां गणतां चोवीश जिननां एकशोने वीश कल्याणिक थायछे तेनां दिवसोनुं यंत्र नीचे आप्युंछे.

तेनी समज आ प्रमाणे छे के प्रथमनां कोठामां जे त्रण बावीश इत्यादिक आंकडा लखाछे ते जिहां त्रणनो आंक होय तिहां त्रीजा तीर्थंकर श्रीसंभव नाथ समजवा अने जिहां बावीशनुं आंक होय तिहां बावीशमां तीर्थंकर श्रीनेमिनाथ समजवा ए रीतें जिहां जे आंक होय तिहां तेटलामां तीर्थंकरनो नाम समजी लेवो तेवार पछी प्रत्येक महीनानां शुक्ल अथवा कृष्ण पक्ष मांहेलां जे जे पक्षमां श्रीतीर्थंकर प रमात्माना जन्मादि कल्याणिक थयाछे ते पक्ष जणा व्या छे तेवार पछी पांच बार इत्यादिक जे आंक लखे ला छे ते वद पांचम तथा बारस इत्यादिक तिथि सम जवी तेवार पछी केवलज्ञान तथा चवन इत्यादिक जे लखेलाछे ते सर्व प्रभुना कल्याणिक समजवा तथा उ पर जे कार्त्तिक वदि शुदिपक्ष एवो करीने तेनी पासें जे सातडानुं आंक लखेलुं छे ते कार्त्तिक महीनामां सर्वमली सात कल्याणिक थयाछे एरीतें बारेमहीनी आगल जे आंक लख्याछे ते सर्व आंक ते ते महीना नां कल्याणिकनी संख्यानां समजवा.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥कार्त्तिकवदिशुदिपक्ष॥७॥
३ वदि ५ केवलज्ञान०॥
२२ वदि १२ चवन०॥
६ वदि १२ जनम्या.
६ वदि १३ दिक्षालीधी.
२४ वदि ३० मोक्षपाम्या.
ए शुदि ३ केवलज्ञान०
१८ शुदि १२ केवलज्ञान०
॥मागशिरवदि शुदि॥१३॥
ए वदि ५ जनम्या.
ए वदि ६ दिक्षालीधी.
२४ वदि १० दिक्षालीधी.
६ वदि ११ मोक्षपाम्या.
१८ शुदि १० जनम्या.
१८ शुदि १० मोक्षपाम्या.
१८ शुदि ११ दिक्षालीधी.
१ए शुदि ११ जनम्या.
१ए शुदि ११ दिक्षालीधी.
१ए शुदि११ केवलज्ञान०
२१ शुदि११ केवलज्ञान०
३ शुदि १४ जनम्या.
३ शुदि १५ दिक्षालीधी.
॥पौषवदिशुदिपक्ष॥१०॥
२३ वदि १० जनम्या.
२३ वदि ११ दिक्षालीधी.
८ वदि १२ जनम्या.
८ वदि १३ दिक्षालीधी.
१० वदि १४ केवलज्ञान०
१३ शुदि ६ केवलज्ञान०
१६ शुदि ए केवलज्ञान०
२ शुदि ११ केवलज्ञान०
४ शुदि १४ केवलज्ञान०
१५ शुदि १५ केवलज्ञान०
॥महावदिशुदिपक्ष॥१४॥
६ वदि ६ चवन०॥
१० वदि १२ जनम्या.
१० वदि १३ दिक्षालीधी.
१ वदि १३ मोक्षपाम्या.
११ वदि ३० केवलज्ञान०
४ शुदि २ जनम्या.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२ शुदि २ केवलज्ञान०
१५ शुदि ३ जनम्या.
१३ शुदि ३ जनम्या.
१३ शुदि ४ दिक्षालीधी.
२ शुदि ८ जनम्या.
२ शुदि ए दिक्षालीधी.
४ शुदि १२ दिक्षालीधी.
१५ शुदि १३ दिक्षालीधी.
फागुणवदिशुदिपक्ष॥१५॥
७ वदि ६ केवलज्ञान०
७ वदि ७ मोक्षपाम्या.
८ वदि ७ केवलज्ञान०
ए वदि ए चवन० ॥
१ वदि ११ केवलज्ञान०
२० वदि १२ केवलज्ञान०
११ वदि १२ जनम्या.
११ वदि १३ दिक्षालीधी.
१२ वदि १४ जनम्या.
१२ वदि ३० दिक्षालीधी.
१८ शुदि २ चवन० ॥
१ए शुदि ४ चवन० ॥
३ शुदि ८ चवन० ॥
२० शुदि १२ दिक्षालीधी.
१ए शुदि १२ मोक्षपाम्या.
॥ चैत्रवदिशुदिपक्ष ॥१३॥
२३ वदि ४ चवन० ॥
२३ वदि ४ केवलज्ञान०
८ वदि ५ चवन० ॥
१ वदि ८ जनम्या.
१ वदि ८ दिक्षालीधी.
१७ शुदि ३ केवलज्ञान०
१४ शुदि ५ मोक्षपाम्या.
२ शुदि ५ मोक्षपाम्या.
३ शुदि ५ मोक्षपाम्या.
५ शुदि ए मोक्षपाम्या.
५ शुदि ११ केवलज्ञान०
२४ शुदि १३ जनम्या.
६ शुदि १५ केवलज्ञान०
वैशाखवदिशुदिपक्ष॥१७॥
१७ वदि १ मोक्षपाम्या.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१० वदि २ मोक्षपाम्या.
१७ वदि ५ दिक्षालीधी.
१० वदि ६ चवन० ॥
२१ वदि १० मोक्षपाम्या.
१४ वदि १३ जनम्या.
१४ वदि १४ दिक्षालीधी.
१४ वदि १४ केवलज्ञान०
१७ वदि १४ जनम्या.
४ शुदि ४ चवन० ॥
१५ शुदि ७ चवन० ॥
४ शुदि ८ मोक्षपाम्या.
५ शुदि ८ जनम्या.
५ शुदि ए दिक्षालीधी.
२४ शुदि १० केवलज्ञान.
१३ शुदि १२ चवन० ॥
२ शुदि १३ चवन० ॥
॥ ज्येष्टवदिशुदिपक्ष॥१०॥
११ वदि ६ चवन० ॥
२० वदि ८ जनम्या.
२० वदिए मोक्षपाम्या.

१६ वदि १३ जनम्या.
१६ वदि १३ मोक्षपाम्या.
१६ वदि १४ दिक्षालीधी.
१५ शुदि ५ मोक्षपाम्या.
१२ शुदि ए चवन० ॥
७ शुदि १२ जनम्या.
७ शुदि १३ दिक्षालीधी.
॥ आषाढवदिशुदिपक्ष॥६॥
१ वदि ४ चवन० ॥
१३ वदि ७ मोक्षपाम्या.
२१ वदि ए दिक्षालीधी.
२४ शुदि ६ चवन० ॥
२२ शुदि ८ मोक्षपाम्या.
१२ शुदि १४ मोक्षपाम्या.
॥ श्रावणवदिशुदिपक्ष॥ए॥
११ वदि ३ मोक्षपाम्या.
१४ वदि ७ चवन० ॥
२१ वदि ८ जनम्या.
१७ वदि ए चवन० ॥
५ शुदि २ चवन० ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२२ शुदि ५ जनम्या.
२२ शुदि ६ दिक्षालीधी.
२३ शुदि ८ मोक्षपाम्या.
२० शुदि १५ चवन० ॥
॥नाऽवावदिशुदिपक्ष॥४॥
१६ वदि ७ चवन० ॥
८ वदि ७ मोक्षपाम्या.
७ वदि ८ चवन० ॥
ए शुदि ए मोक्षपाम्या.
॥ आशोवदिशुदिपक्ष ॥३॥
२२ वदि ७ केवलज्ञान०
२१ शुदि १५ चवन० ॥

॥ अथ श्री शत्रुंजय पद ॥

॥ दादा मोरा सासरीए वलाव्य,सासरीयां जाए ले रे शेत्रुंजो नेटवा ॥ जाशे जाशे जेगणोनी जोड, देरा णीयो जाशे रे डुरितने मेटवा ॥ १ ॥ धियडी मारी शेत्रुंजो ले दूर,सासर वासो रे नथी सज्यो वली ॥ करण ले आ उनालानो काल, जूनी लहेरें रे शरीर रहे बली ॥२॥ दादा मोरा पापीने ले दूर,सासरवासो रे मुने पोहोतो सवे ॥ नलें लह्यो उनालो ए वाट, न वमां नमतां रे जाणुं बुं बहु नवें ॥ ३ ॥ घेली बेटी घेलडीयां श्यां बोल, देशावर जातां रे डुःख बहु दे खवुं ॥ दादा मोरा नजरें देखुं ए देश,तो डुःख सघलां रे सुख करी लेखवुं ॥ ४ ॥ डुर्गतिनां पाडुं हो दांत,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुगति वसावुंरे सहजें हाथमां ॥ जाशुं जाशुं शेत्रुं जानी हो जात्र, समकितधारी रे सामीनी साथमां ॥ ५ ॥ दादा मोरा सहज वलावे लोक, माडीनो जा यो रे सार्थे मोकलो ॥ अगाउ चलावो हो आज, ख बर देवाने पंमयो खोखलो ॥ ६ ॥ पूरुं मारा मनडा ना कोड,हल हल करीने हौंशें हालशुं ॥ लेवा लेवा मुगतिनी मोज,चौंप करीने रे पंथें चालशुं ॥७॥ एवो एवो करे ले आलोच, स्वामीनुं तेडुं रे आव्युं ते स मे ॥ वोलावी दीधी ले तेने वेग, शेत्रुंजे जइने रुष नने ते नमे ॥ ८ ॥ नांगी नांगी नवनी हो नूख, गिरिवरियो देखीने मनडुं गहगह्युं ॥ वुगा वुगा दूधडे हो मेह,हर्षनेपूरेंरे हैयडुं हसी रह्युं ॥ए॥ जमडा तणुं तिहां नहीं हो जोर, जेणें प्रनु पूज्यां रे फूलें फूटरें ॥ शुं करे तेहने हो रोग, अमीरस पीधो रे जे नरें घूं टडे ॥ १० ॥ देशमांहे ले शोरठ देश, तीरथ मांहे रे शेत्रुंजो तेम लहो ॥ हारमांहे हो हारमां नगीनो जेम, उदयरत्न कहे साचुं सहहो ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ पद ॥

॥ नानिरायावशें वारु उदयो दिणंद,देवनो में देव

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दीगो आदिजिणंद ॥ आदिजिणंद हांजी मरु देवीनो नंद ॥ ना० ॥ १ ॥ मीगो लागे माहाराज रूप ताहारो आज, मुजरो लीयो माहारो सारोने काज ॥ दिवस घणे दीगो तुने नाथ मुने नेह, उपनो आनंद तेहनो कोण लहे छेह ॥ २ ॥ मी० ॥ ताथेइ ताथेइ तानवाजे थीनगीन दों,मृदंग देव डुंडुनि ते वाजे दोंदों ॥ उँ उँ शंख वाजे ताजकंसाल, धपमप मादल धमके रसाल ॥ मी० ॥ ३ ॥ दंकिटि दंकिटि थेइ थइ थाप, पधनी धपमधप थइ अतिव्याप ॥ घणणण घूघरा घमके रे पाय, जणणण जणकारा नेरीना थाय ॥ मी० ॥ ॥ ४ ॥ नाची कूदी पाय वंदी नविजन नावें, नगतिशुं नगवंतने शीस नमावे ॥ मुगतिनी मोज आपो मागु बे कर जोड, उदयरतन कहे नवडुःख छोड ॥मी०॥५॥ इति श्री शत्रुंजय स्तवन समाप्त ॥

इति श्री शत्रुंजय महातीर्थनां रास उद्धारादि ग्रंथोनां संग्रहनुं पुस्तक समाप्त ॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private and Personal Use Only